श्रीवीतरागाय नमः ।

कवि भारामल्लकृत

दर्शनकथा भाषा ।

दोहा—नमो देव अरहंतपद, नमो शारदा माय ।
नमो गुरु निरग्रन्थ जे, अघहर मंगलदाय ॥

चौपाई—ऋषभनाथ जिन प्रणमूं तोय । अजर अमर पद दीजे मोय ॥ अजित जिनेश्वर वंदन करूं । कर्म कलंक छिनकमें हरूं ॥ १ ॥ वंदूं संभव जिनके पाय । अभिनंदन सुमरूं मन लाय ॥ सुमति जिनेश नमो कर जोर । भवफांसी जिन डारी तोर ॥ २ ॥ वंदूं पद्मप्रभके पाय । जाके सुमरत पाप नसाय । नमो सुपारसनाथ जिनेश । जाके सुमरत कटें कलेश ॥ ३ ॥ वन्दूं चन्द्रप्रभ जिनदेव । इंद्र नरेंद्र करें सब सेव ॥ पुष्पदंत शीतल जिनराय । नमो श्रेयांश जिनेश्वर पाय ॥ ४ ॥ वासुपूज्य महाराज सुपूज । भवदधितारनतरन सु हूज ॥ वंदूं विमलनाथके पाय । जासों जन्म जरा मिट जाय ॥ ५ ॥ नमो अनन्त जिनेश्वरपाय । सुमरत कटत करम दुखदाय ॥ धर्मनाथ वंदू सुखकार । भवदधि पार उतारनहार ॥ ६ ॥

शांति कुंथु श्रीअरहजिनेश । ते वंदूं जु सदा परमेश । मल्लिनाथ सुमरूं मन लाय । जन्मजन्मको पातक जाय ॥ ७ ॥ वंदूं मुनिसुव्रत गंभीर । सुमरत मिटै जु भवभयपीर ॥ नेमिनाथ वंदूं सुखकार । भवदधि पार उतारनहार ॥८॥ वंदूं नेमिनाथ जिनराय । बालब्रह्मचारी सुखदाय ॥ पशुअनकाज चढ़े गिरनारि ॥ विलखत छोड़ि राजुलनारि ॥ ९ ॥ वंदूं पारस नाथ जिनंद । कमठमानभंजन सुखकंद ॥ महावीर वंदूं सुख-दाय । सब आगम जिन दिये बताय ॥ १० ॥

दोहा—चौवीसों जिन वंदिकै, सरसुतिको सिर नाय ।
कथा कहूं जिनदर्शनकी, सुनो भव्य मन लाय ॥११॥

चौपाई—गुरु गौतमके सुमरूं पाय । दर्शनकथा कहूं मन लाय ॥ दर्शन बड़ो जिनवरको सार । दर्शन करो सबै नर नार ॥ १२ ॥ पहले श्रीजिनदर्शन करो । और काज पीछे विस्तरो ॥ जो जिनदर्शन करैं नित सार । धन्य जन्म ताको अवतार ॥ १३ ॥ जो जिनदर्श करें नहिं जान । उदर भरें ते पशूसमान ॥ दर्शनविन धिक जीवन होय । तातैं दर्श करो सब कोय ॥ १४ ॥ दर्शप्रतिज्ञा मनोवति लई । दर्शकथा ताकी यह भई ॥ सुनियो भविजन चित्त लगाय । जाके सुनते विघन नसाय ॥ १५ ॥ जंबूद्वीप द्वीपसरदार । तामें भरतक्षेत्र अधिकार ॥ कुरुजांगल महादेशमँझार । हथनापुर जहां नगर सु सार ॥ १६ ॥ ता नगरी महिमा को कहै । स्वर्गपुरीसम शोभा लहै ॥ वन बारह जोजन विस्तार । वसैं नगर सो अति सुखकार ॥ १७ ॥ बाग बगीचे वन अति सोहैं । खाई कोट

सजल सब मोहै ॥ महलन पंकाति शोभै बनी । अमर-पुरीसम शोभा बनी ॥ १८ ॥ श्रावक लोग बसै शुभ सार । सो सब उत्तमकुल अवतार ॥ जिनवर भवन तहां शोभंत । कनक कलश तापर झलकंत ॥ १९ ॥ सब शोभा बरनन-को कहै । बढ़ै कथा कछु अंत न लहै ॥ तिस नगरीको भूपति जान । नाम यशोधर कहूं बखान ॥ २० ॥ राजा राज करै सुखकार । दीन जननको है प्रतिपाल ॥ न्यायवंत सो नृप पग धरे। अन्य कुमारग कबहुं न करै॥२१॥ चहुदिशि सुयश रह्यो जिहि छाय । यातैं कह्यो यशोधरराय ॥ ताके राजमँझार जु सोय। ईति भीति नहिं व्यापै कोय ॥ २२ ॥ ताही नगर इक सेठ सुजान । नाम कह्यो महारथ सु-बखान ॥ पूरब पुन्य उदय अब सोय । ताकै घर लछमी बहु होय ॥ २३ ॥ बावन धुजा लसैं तहां सार । जाकै बावन कोट दिनार ॥ पुन्यथकी कहा कहा नाहि होय । पुन्यसमान और नहिं कोय ॥ २४ ॥ महासेना ताके घर नार । शीलवंत गुणकी अधिकार ॥ सुता भई ताके इक सार । मानो सुरकन्या अवतार ॥ २५ ॥ नाम मनोवति जो गुन भरी । रूपवंत शुभगुण अधि-कारी ॥ जब ही आठ वर्षकी भई । मुनिके पास पढ़नको गई ॥ २६ ॥ सो छह महिना भीतर सार । विद्या सर्व पढ़ी अधिकार ॥ पढ़कर जबै तातघर गई । सुनकै तात महासुख लई ॥ २७ ॥ अब तो दिनादिन बढ़त कुमार ।

जैसे दोयजचंद प्रकार ॥ षोडशवर्षतनी जब भई । तबै तात मन चिन्ता थई ॥ २८ ॥ पुत्री भई व्याहवरजोग । ताको कीजै शुभ संयोग ॥ तबै पुरोहित लियो बुलाय । तासौं बात कही समझाय ॥ २९ ॥ पुत्रीको वर ढूंढो सार । सुंदर रूप महा सुखकार ॥ मो सम जो नर हो धन-वान । ताघर परनो जाय निदान ॥ ३० ॥ सेठ हुकम तब सिरपै धरो । सो अब विप्र तहांतें चलो ॥ देशन देश फिरै अब सोय । घर वर सोय मिलै नहिं कोय ॥ ३१ ॥ भ्रमत भ्रमत तहां वहु दिन गए। छहक मास बीतत जो भए ॥ फिर चालौ तहांतै अधिकार । आगै और सुनो विसतार ॥ ३२ ॥

चाल छन्द–भ्रमतो भ्रमतो जहां आयो, तहां देश अवंति सुहायो । वल्लभपुर नगरके माहीं, आयो सो तत-च्छन ताहीं ॥ ३३ ॥ सो देख नगर सुखकारी, मानो अमरापुरि भारी । कहुं देखे दीनौरन ढेरी, कहुं मुक्ता-फल जु घनेरी ॥ ३४ ॥ कहुं मोती माणिक झलकै, कहुं मोती झालर लटकै । जिनभवन वने सुखकारी, तापै कंचन कलशा भारी ॥ ३५ ॥ तहां राज करै जो सयानो, श्रावक कुल उत्तम जानो । तिनको तहां वास वखानो, मरुदत्तसेठ तहां जानो ॥ ३६ ॥ परजा पालै सुखकारी, न्यायवंत सगुण अधिकारी । सोमदत्त सेठ तहां जानो, सो तो अधिको धनवानो ॥ ३७ ॥ हेमश्री ता घर नारी, शीलवंत सगुण अधिकारी । भए सात पुत्र सो ताकै,

अधिके गुणवंत सो जाके ॥ ३८ ॥ छहकी सो व्याह जो कीनो, लघु है वृषसेन प्रवीनो। रूपवंत अधिक वह जानो, मानो देवसमरूप बखानो ॥ ३९ ॥ सो देख विप्र मनमाहीं, ऐसे जु विचार कराहीं। यह योग मिलो अब आई, ऐसो फिर मिलवौ नाई ॥ ४० ॥ तब सेठसूं कैसे कही है, यह बात सुनो जो सही है। हथिनापुर नगरकेमाहीं, जु महारथ सेठ बसाहीं ॥ ४१ ॥ सो इक पुत्री है तिनकै, अधिक धन-वान जु जिनकै। सो तुम लघु सुतको दीनी, जो गुणकर परम प्रवीनी ॥ ४२ ॥ इतनी सुनके सुख पायो, नगरी जु बुलावा दिवायो। तहां जुरी है नगरकी नारी, गावैं सब मंगलचारी ॥ ४३ ॥ जाचक जन दान सुदीनों, सज्जन सन्मान जू कीनों। जिनभवन सु पूजा रचाई, वसुविधिसों द्रव्य चढ़ाई ॥ ४४ ॥ सुमुहूरत दिन सुधवायो, फिर टीका कुँवर चढ़ायो। फिर विप्र विदा तब कीनो, ताको जु अतुल धन दीनो ॥ ४५ ॥ फिर चालो तहांते सोई, दिन रात्रि गिनै ना कोई। सो कछुक दिननकेमाहीं पहुंचो हथिनापुर जाहीं ॥ ४६ ॥ तबही विरतांत सुनायो, सुनि सेठ महा सुख पायो। इह विधि सो भई है सगाई, सोतो सबके मन भाई ॥ ४७ ॥

दोहा—इहविधिसों सुन्दरतनी, भई सगाई सार।
और कथा आगे अबै, कहूं सुनो विसतार ॥ ४८ ॥

चौपाई—सुंदरिने जानी तब सोय। अब तो व्याह हमारो होय। एक दिवस श्रीमुनिपै गई। तीन प्रदक्षिणा

देती भई ॥ ४९ ॥ करुणानिधि तुम दीनदयाल । अरज सुनो शरणाप्रतिपाल । कछु व्रत मोकों दीजे सोय । जासौं सार जन्म अब होय ॥ ५० ॥ फेर मुनीश्वर कैसैं कही । धन्य जन्म तेरो अब सही । तैं जिनव्रत जांचो अब सोय । तो सम नारी और न कोय ॥ ५१ ॥ पुष्पांजलि व्रत श्री- मुनि दियो । तब सुंदरि सिरनाय जु लियो ॥ सब विधि ताकी दई बताय । फिर बोले ऐसे मुनिराय ॥ ५२ ॥ जो तैं जिनव्रत लीनो सार । दर्शप्रतिज्ञा कर सुखकार ॥ दर्शन विन धिक जीवन कोई ॥ पशुसमान नर नारी होई ॥ ५३ ॥ इतनी सुनकर सुन्दरि कही । दर्शप्रतिज्ञा मैं अब लई । एक प्रतिज्ञा लई शुभसार । सो सुनियो तुम मुनिव्रतपार ॥ ५४ ॥ गजमोतिनके पुंज चढ़ाय । तब मैं भोजन करूं बनाय । इतनी दर्शप्रतिज्ञा लई । श्रीमुनिवरकी साखि जु दई ॥ ५५ ॥ लेय प्रतिज्ञा निज घर गई । सुनके तात कहे अब सही ॥ अरु जो भली करी सब सोय । एक कठिन निवेहं ना कोय ॥ ५६ ॥ गजमोतिनके पुंज चढ़ाय । तब तू भोजन करै बनाय । जब लग मोघर रहे निदान । नित प्रति दर्श करो भगवान ॥५७॥ जा दिन सासर घर तू जाय । ता दिन कठिन पड़ेगी आय ॥ तब सुंदरी फिर कैसें कही । तात वचन तुम सुनियो सही ॥ ५८ ॥ अब जो दर्शप्रतिज्ञा लई । श्रीमुनिवरकी साखि जु दई । प्राण जाय तो जावें सोय । लई प्रतिज्ञा तजै न कोय ॥ ५९ ॥

दोहा—लई प्रतिज्ञा सुंदरी, भई सगाई सार।
और कथन जो व्याहको, सुनो सबै चित धार ॥६०॥

सोरठा—दिन मुहूर्त सुधवाय, शुभ लग्न पहुंचाइयो।
और सुनो मन लाय, कारण तहां बनाइयो ॥ ६१ ॥

चौपाई—टीका दिन जब पहुंचो आय। तहँ तब सजी बगत बनाय। हय गज रथ वाहन असवार। चतुरंग दल साजे सु अपार ॥ ६२ ॥ अरबी सुरती अरु करनार। तूर मृदंग भेर सहनार। सब शोभा बरनन को कहै। बढ़े कथा कछु अंत न लहै ॥ ६३ ॥ चलत चलत तब कछु दिन गये। हथनापुर आवत सो भये ॥ डेरे दिये बागमें जाय। तहां निशान रहे फहराय ॥ ६४ ॥ नेग चार तहां बहुविधि किये। और षट्-रसके भोजन दिये। एक प्रहर निशि बीती जबै। शुभ बारात कीनी तबै ॥ ६५ ॥ सज कर ही चालै सुखकार। चतुरंग दल साजो सु अपार। अरबी सुतरी अरु करनार। बाजे तूर मृदंग सहनार ॥ ६६ ॥ नौबतखाने बजे अपार। आगे और सुनो विसतार। आतशबाजी हवाई सोय। छुटै तहां लखै सब लोय ॥ ६७ ॥ कहँ बात को बहुत बढ़ाय। दरवाजे सो पहुंचे जाय। शोभा दीनी अधिक अपार। कौन कहै ताको विसतार ॥ ६८ ॥ कंचन कलश दिये अधिकार। और दिये गजमोती हार ॥ कुण्डल कड़े अधिक अब शान। खासा मलमल दिये सुजान ॥ ६९ ॥ बहुत बात को कहै बढ़ाय। तीन दिवस राखे फिर ताय। चौथो दिन

पुन लागौ जवै। करी वरात विदा सो तबै ॥ ७० ॥ पुत्रीको समझावै तात। सुंदरी सुनो हमारी वात ॥ कुलकी रीति चलो तुम सोय। जासो मेरी हंसि न होय ॥७१॥तुमतैं जेठी जो कोइ होय। भूल न उत्तर दीजे कोय ॥ सास हुकम तुम सिरपर धरो। यह आज्ञा मेरी मन करो ॥ ७२ ॥ जिनवर दर्शप्रतिज्ञा लई। सो दृढ कर पालो तुम सही ॥ इह विधि तात सीख जब दई। सुंदरि चितमें सब धर लई॥७३॥ कूच करो तहंतैं अब सोय। दिन अरु रात गिने ना कोय। बहुत बात को कहै वढ़ाय। वल्लभपुरमें पहुँचे आय ॥ ७४ ॥ पहले श्री-जिनमन्दिर जाय। वर कन्याको धोक दिवाय ॥ वसुविधि कर पूजे सो जिनन्द। जासों कटैं कर्मके फंद ॥ ७५ ॥ फिर घरमें वहु लीनी सार ॥ नारी गावैं मगलचार ॥ जाचक जनको दान सु दियो ॥ सज्जनको सन्मान जु कियो ॥७६॥

दोहा—इहविधिसों जो व्याहकर, निजघर आये सोय।
और कथा आगे सुनो, जो कछु जैसी होय ॥ ७७ ॥

चौपाई—नौतो फेरो नगर मंझार। नौते तवै सकल नर नार ॥ नगरतने नरनारी सबै॥ जुर कर भोजन कीनों तवै॥ ७८ ॥ फिर घरको जो कुटुम्ब परिवार। जीमे षट्रसकी ज्योनार ॥ घरकी त्रिया सबै रह गई ॥ तवही सास वहूपै गई ॥ ७९ ॥ उठो वहू भोजन कर लेहु। सब जन मनको आनंद देहु ॥ सुन्दरी मनमें करत विचार। दर्शप्रतिज्ञा लई सुखकार ॥ ८० ॥ गजमोतिनके पुंज चढ़ाय।

तबही भोजन करूं बनाय ॥ जो गजमोती चढ़ाऊं न कोय। यह तो बात ठीक नहिं होय ॥ ८१ ॥ तातैं मौन लयो सुख-कार। ताको मरम खुले नहिं सार ॥ तब सुंदरिपैं कैसे ठयो। आगे और कथन जो भयो ॥ ८२ ॥

दोहा—ठाड़े ठाड़े सासको, बीती घरी जो चार।
फेर गई निज कंतपै, जहां बैठे भरतार ॥ ८३ ॥

चौपाई—तबै सेठसों ऐसे कही। बहू मौन लीन्यो अब सही। कछु जुवाब ना दे अधिकार। ताको कीजे कौन विचार ॥ ८४ ॥ तबैं सेठ फिर ऐसे कही। यासों हठ कछु कीजे नहीं। लड़की भोली जान अजान। सकुचत है सुनि सो परवान ॥ ८५ ॥ जब सकुच तिहि छूटे सोय। भोजन करै चिंत नहिं कोय ॥ सुंदरिने व्रत लीनो सार। उरमें जपै पंच नवकार ॥ ८६ ॥ अन्न सुजल त्यागन कर दियो। जिनवरको तब सुमरन कियो ॥ एक दिवस बीत्यो तब आय। आगे और सुनो मन लाय ॥ ८७ ॥ दूजौ दिन पुन लाग्यो जबै। सास बहूपै पहुँची तबै ॥ उठो बहू भोजन कर लेहू ॥ ऐसी सकुच छांडि अब देहू ॥ ८८ ॥ तब जुवाब दियो नहिं कोय। बीत गये जाकों दिन दोय। तबै सेठ फिर ऐसे कही। एक बात कीजे अब सही ॥ ८९ ॥ अन्न सुजल छांडो परिवार। जान परै तब बात जु हाल। सेट हुकमतैं जानो सोय। तब तो भोजन करो न कोय ॥ ९० ॥ बहुत बातको कहे बढ़ाय। तीन दिवस बीते जब आय। एक दिवस जो

सव परिवार। ऐसे संकट परो अपार ॥ ९१ ॥ चौथो दिन पुन लाग्यो जवै । खवर करी सो तातके तवै ॥ ऐसी खवर सुनी तत्काल। तातैं सुत भेजो दर हाल ॥ ९२ ॥ तवै सजन सों ऐसे कही । हमरी वात सुनो तुम सही ॥ और तो आदर पीछे भने ॥ एक वात हम पूछें तुमें ॥ ९३ ॥ तुमरी भगिनी जानो सार । अन्न सुजल छांड़ो तत्काल ॥ तीन दिवस वीते अव ताय । कारण कौन कहो समझाय ॥ ९४ ॥

गीता छन्द—इतनी जो सुनकर भ्रात मनमें चल सुभगिनी पै गयो। अति सरल कोमल वचन तासों फेर तव कहतो भयो। किस काजतै अव मौन लीनो अन्न सुजल छुटाइयो। आनंदमें संकट जु कीनो सव वृत्तांत सुनाइयो ॥ ९५ ॥ सुंदरि तासूं तवै वोली भ्रात अव सुन लीजिये। जिनराज दर्शप्रतिज्ञ लीनी श्रीमुनीकी साखि ये ॥ गजमोतियोंके पुंज लाउं श्रीजी आगे जगमगैं। तव करूं भोजन भ्रात मेरे जासु अरु सव डर भगैं ॥ ९६ ॥ सो मोति मोको दिसत नाहीं कैसे भोजन मै करूं। तातें जो सुनियो भ्रात मेरे मौन लीनो अति खरूं। जलदी सु विदी करवा मेरी कछू और न वोलीयो। पीहर मुझे तुम ले चलो दरजा कछु ना खोलियो ॥ ९७ ॥

चौपाई—जव पहुंचूं हथिनापुर माहीं । भोजन करूं चिंत कछु नाहीं। इतनी सुनकर ताको भ्रात ॥ महलन

बाहर गयो अवदात ॥ ९८ ॥ तबै सेटसों ऐसे कही । याकी चिंत कछु कीजे नहीं ॥ लड़की भोली जान अजान । सकुचत है मनमें परमान ॥ ९९ ॥ जलद विदा दीजे करवाय । हथिनापुर करे भोजन जाय ॥ इतनी सुनकर सेठ जो कही । यह बात हम मानें नहीं ॥ १०० ॥ आखिर जा घरको अब सोय । भेद कहो समझाय जु मोय ॥ इतनी सुनकर कुमरा जबै ॥ सेठ वचन तुम सुनियो अबै ॥ १०१ ॥ याने दर्शप्रतिज्ञा लई । श्रीमुनिवरकी साखि जु दई ॥ गजमोतिनके पुंज चढ़ाय । तब यह भोजन करै बनाय ॥ १०२ ॥ सो मोती दीसै ना कोय । किहिविध भोजन याको होय ॥ इतनी सुनकर सेठ जो जबै । भीतर महलन पहुँचो तबै ॥ १०३ ॥ पुत्रिसमान बहूको जान । तासों ऐसे कहत बखान ॥ क्यों दुःख सहो वृथा अब तोह । काहे नाहिं जताई मोह ॥ १०४ ॥

छन्द चाल—जब तुरत कुठारी बुलायो, तापै भंडार खुलायो । असुजातिके मोती जानो, तिनके बहु ढेर बखानो ॥ १०५ ॥ गजमोतिनकी दई ढेरी, अरु जात अनेक घनेरी । सुंदरीसों ऐसे कही है । बहु बात सुनो जो सही है ॥१०६॥ जौलों जन्म रहेगो तिहारो, मन माने मोती हमारो । जिनदर्शन नित प्रति कीजे, गजमोती पुंज सो दीजे ॥ १०७ ॥ इतनी सुनकर जब नारी, आनंद बढ़ो अति भारी ॥ असनान करो अब जाने, पहरे उज्जल चीर सु ताने ॥ १०८ ॥ गजमोती करमें लीने, जिनभवन पयान सुकीने । जिनदर्श

करे अब जाने । मन फूल न अंग समाने ॥ १०९ ॥ फिर निज घर सुंदरी आई, भोजन तब कीनो बनाई । चौथे दिन भोजन कीनो, जब जिनदर्शन कर लीनो ॥ ११० ॥ जो धन धीरज है ताको । सो धन्य जन्म है याको ॥ फिर भई विदा अब सोई । चाली निज पीहर जोई ॥ १११ ॥

चौपाई—सुंदरि तो पीहरमें गई । आगे सुनो कथा जो भई मालिन घरतैं चाली हाल । पहुंची श्रीजिनभवनमॅझार ॥११२॥ गजमोती उन देखे जबै । मनमें अचरज कीनो तबै । ऐसो धनपति आयो कौन । गजमोती जु चढ़ाये भौन ॥ ११३ ॥ ताने मोती सब ले लिये । फिर तो निजघरको पग दिये । माली देखत ऐसे कही । नार बात अब सुनियो सही ॥११४॥ ये गजमोती हैं अब सोय । कीमत धनी जाने सब लोय । हमपै भूपत लेय छिनाय । हमरे घर ये नीके नांय ॥११५॥ तातैं एक करो अब सोय । जासों कछु प्रापति अब होय । अब जाओ उद्यानमॅझार । फूल चंवेली ल्यावो सार ॥११६॥ तामें गजमोती गुंथवाय । सुंदर हार बने सुखदाय । रानी उरमे डारै जबै । सो इनाम देवेगी तबै ॥ ११७ ॥ जावो घरसे तुम अब सोय । और विचार न दूजो कोय ॥ इतनी सुनकर मालिन जबैं । बागनमें सो पहुंची तबै ॥ ११८ ॥ फूल चंवेली ल्याई तबै । सो अब हार बनायो जबै । कली कली गजमोती डार । सुंदर हार करो तैयार ॥ ११९ ॥ लेय हार रनवासै गई । दरवाजे सों पहुंचत भई । मनमें विचार

करै अब सोय । भूपतिके रानी है दोय ॥ १२० ॥ किसके उरमें डारूं जाय । ऐसे मनमें सोच कराय । फिर मनमें तिन कियो विचार । लघु रानीपै नृपको प्यार ॥ १२१ ॥ ताके उरमें डारूं जाय । बहुत इनाम देयगी ताय । लघु रानीपै पहुंची जबै । रानी उरमें डारो तबै ॥ १२२ ॥ रानी देख प्रफुल्लित भई । बहुत इनाम तासुको दई । ले इनाम निज घरको गई । आगे और सुनो जो भई ॥ १२३ ॥

दोहा—बड़े महलकी दासियां, खड़ी हुतीं तहां कोय ।
जाय कही रनवासमें, रानीसे फिर सोय ॥ १२४ ॥

अडिल्ल—भूपतिके निंदा है तिहारी अति बड़ी । जो तो में अब थी देखत यहांपर खड़ी । औरकी तो कहा बात सुनो अतिकार जू । मालिन भी तुम्हें निंदत देत न हारजू॥१२५॥

चौपाई— तुमरे जीवनको धिक्कार । तुमरी निंदा बढ़ी अपार । इतनी सुनकर रानी जबै । मनमें क्रोधित भइ अति तबै ॥१२६॥ अन्न सु जल छांडो अब सोय । मुख न प्रछालो ताने कोय ॥ दोय पहर दिन जब चढ़ गयो । भोजनको नृप आवत भयो ॥ १२७ ॥ तब दासी बोली कर जोर । हो महाराज सुनो तुम और ॥ जेठी रानी क्रोध जु कियो । अन्न सुजल त्यागन कर दियो ॥ १२८ ॥ मुख नहिं प्रक्षालो उन कोय । रुदन करै अति ही वह सोय । इतनी सुनकर भूपति जबै । ताके महलन पहुंचे तबै ॥ १२९ ॥ जब रानीसों कैसे कही ।

कारण कौन कहो अब सही। तब रानी बोली बिलखाय। हो महाराज सुनो मन लाय ॥ १३० ॥ मेरो ना कछु आदर होय। छोटी रानी प्यारी सोय ॥ औरकी बात कहां भूपार। मालिन भी निंदै अतिकार ॥ १३१ ॥

अड़िल्ल—फूल चंबेली गजमोती गुंथवायकै। सुन्दर हार जो वह लाई थी बनायकै ॥ जेठो महल सो ताने अब बूझो नहीं। लघु रानिके उरमें वह डारो सही ॥ १३२ ॥

चौपाई—तातै सुनियो तुम भूपार। मेरे जीवनको धिक्कार। तातैं सुन लीजे भूपाल। मैं अब प्राण तजूं ततकाल ॥१३३॥ इतनी सुनकर भूपति तबै। दई दिलासा ताको जबै। मनमें चिंता कर मति कोय। ताको हार बड़ाउं सोय ॥ १३४ ॥

दोहा—वाको तो फूलन सहित, मालिन लाई हार।
गजमोतिनहीको अब, तोय घड़ाऊं नार ॥ १३५ ॥

चौपाई—इहिविधि भूप दिलासा दई। ताके मनमें साता भई। सुख मसालो ताने जोय। इहाविधि रानी हरषित होय ॥ १३६ ॥ कर असनान जु भोजन करो। मनमें बहुत हर्ष तिन धरो। राजा भोजन बहुविधि पाय। तुरत सभामें पहुंचो जाय ॥ १३७ ॥ बहुविधि आनंद जुरे मधान। बैठी सभा नृपकी महान। जसवल तब ही लिये बुलाय। हुक्म कियो तासों तब राय ॥ १३८ ॥ जितने जौंहरी नगरमें होय। लावो सबै रहे ना कोय ॥ इतनी सुनकर जसवन्त तबै। चलत भये जो तहांतै सबै ॥ १३९ ॥

पद्धरी—महाराज हुकुम लायो जु हाल, जलचल छूटे तब ही जु सार। सब पहुंचे नगर दुकान जाय, तिनसों तब कहत बनाय ताय ॥ १४० ॥ महाराज याद कीने जु सोय. सब चलो ढील ना करे कोय। इतनी सुन जौंहरी तब हाल, मनमें कीनो ऐसे विचार ॥ १४१ ॥ यह कारण कौन भयो जु कोय, सबही बुलवाये रहे न कोय। मब जुरके समझ मतो जु कीन, याको सुविचार करो प्रवीन ॥ १४२ ॥ अब इक जुवाब करियो जु सोय, फिर और जुवाब करो न कोय हिमदत्त सेठपर धरो भार, जुरके जु चले दरबार दार ॥ ॥ १४३ ॥ सब पहुंचे सो दरबार जाय, नृपने सन्मान करो बनाय। पाननके बीड़े दिये सोय, जो भूपनिके सन्मान होय ॥ १४४ ॥ फिर पूछे हंसके तब राय, सब जौहरी बात सुनो बनाय। गजमोती तुम पैदा करेहु, जो दाम लगे सो तुरत लेहु ॥ १४५ ॥ अब होनहार निहचे जु होय, ताको मेटन-वारो न कोय। अब होनहारको जोग सोय, हिमदत्त सेठ मुख नहिं होय ॥ ॥ १४६ ॥ अब ही महाराज सुनो जो सोय, गजमोती पैदा नहिं होय। फिरकर पूछे सो तब राय, तौभी मुखतें नाहीं कराय ॥ १४७ ॥ बैसादरमें तृन परो जाय, परजरे भूत जैसे जलाय। अब तो निज घर घर जाहु सोय, इस बातकी चिंता कछु न होय ॥ १४८ ॥ दिन दोय चार दश बीस माहिं, छह महिना बरभनमें बनाहिं। गजमोती कहुं अब दिखें जोय, सुम खाल भरे तब सेव

सोय ॥ १४९ ॥ तब सभी सभा बरखास होय, सब निज निज घर पहुंचे जु लोय । हिमदत्त सेठ घर गए सोय, मनमें तब कीनो विचार जोय ॥ १५० ॥ जो थोरे दिन हम जियें सोय, यह कारण कौन भयो सु जोय । आखिर वहु आवे फेर यांह, गजमोती चढ़ावे रुकै नांह ॥ १५१ ॥ तब भूप सुनें यह बात जोय । लच्छि लुटे ना रहै कोय । कहांकी आई वहू येह, कहांकी जिन दर्शप्रतिज्ञा लेह ॥ १५२ ॥ जिनदर्शन निंदो सेठ ताय, ता सघन पाप लागो अथाय । सब पुत्र जो ताने लिये बुलाय, तिनसें वृत्तांत कह्यो बनाय ॥ १५३ ॥ छह पुत्र कहै सुन तात सोय, अब तो यह बात अयुक्त होय । तातैं इक बात करो जु सोय, जाको नहीं और विचार होय ॥ १५४ ॥ लघु कुंवरे दीजै काढ़ सोई, यह त्रिया शीलवंती है जोई । फिर वहू यहां आवे न कोय, तो गजमोती जाहर न होय ॥ १५५ ॥ इहविधि सो प्राण बचें जु सोय । अरु दूजौ नांहि उपाय होय । फिर सेठ तबै कैसे कहाय, अब पुत्र वचन सुनियो सहाय ॥ १५६ ॥ कैसे जु पुत्रको जन्म होय । सो निजघरतें काढ़े सु कोय । तब बड़े पुत्रने कही सोय, अहो तात सुनो तुम बात जोय ॥ १५७ ॥ इस योगसों एकै बसै सोय, यह बात सु कीजे अभय होय । यो रहै और हम जांय सोय, यह बात कछू ना ठीक होय ॥ १५८ ॥ जो तुम को लघु प्यारौ हि होय, तो अब हम ना रहै कोय । इतनी सुनकरकै

सेट जोय, वहुभांति रुदन कीनो जु सोय ॥ १५९ ॥ यह देवगती कैसी जो होइ, या मुखतें ना निकली जो सोइ। जो लघुको काढूं अब सोय, तो अपयश मो जगमें जु होय ॥ १६० ॥ अरु जो लघुको राखूं में गोइ, तो ये छह नाहीं रहें कोय। फिर कागद लेखन कर जो लेय, लिखनेको कर चाले न तेय ॥ १६१ ॥ आसूं नैनांसे परें सोय, मनमें अति व्याकुल सेट होय। तब बड़ो पुत्र जानि क्रुद्ध होय, कागद करमेंसे लिखा सोय ॥ १६२ ॥ तब तामें ऐसे लिखे सोट, बुधसेन कुमर सुनियो सु जोइ। अब तात हुकम तुमको जु होय, सो घरमें पग दीजे न कोय ॥ १६३॥ जो घरमें पग तुम देहु सार, तो धिक जीवन तुमरो कुमार। इतनी वह लिख करके जो सोय, दासीको कागद दियो जोय ॥ १६४ ॥ सो दरवाजे वैठी जो जाय, कागद करमें तब लियो ताय। तब छह भ्राता दूकान जाय, लघुको निज घरको दियो पठाय ॥ १६५ ॥

चौपाई—सो तब चिनत उठो कुमार। मरमभेद जाने नहिं सार। जब दरवाजे पहुंचो आय। तब दासी कने वतलाय ॥ १६६ ॥ ये कागद तुम लेहु कुमार। तब भीतर पग दीजै सार। इतनी सुनकर कुमार जब। कागद वांचन लागे तब ॥ १६७ ॥ देश निकारो लिखो जो मोय। कैसे विचार करे तब सोय ॥ तात हुकम जो पालूं नहीं। तो धिक जीवन मेरो सही ॥ १६८ ॥ यहांते लौटो

तवै कुमार । नगरी वाहर पहुंचो हाल ॥ मनमें विचार करे तव सोय । धिक लक्ष्मी यह जगमें होय ॥ १६९ ॥ ये छह भ्रात कमाऊ भये । हमको देश निकार जु दिये ॥ तातै जा परदेशमँझार । लच्छि कमा लाऊं सुखकार ॥ १७० ॥ फिर मनमें तव ऐसे कही । शीलवती मेरी तिय सही ॥ जो यह वात सुने है कोय । प्राण तजे निश्चय वह सोय । ॥ १७१ ॥ तातै जा हथिनापुरमाहिं । सो हम वाको देय जताहिं ॥ तव जैहै परदेश मँझार । ऐसे मनमें करत विचार ॥ १७२ ॥ हथिनापुरको पंथ जु लयो । आगे सुनो जो कारण भयो ॥ पैड़ पैड़पै वैठत जाय । धूपको देख वदन कुम्हलाय ॥ १७३ ॥ करम करै सो निश्चय होय । ताको मेट सकै ना कोय ॥ रङ्गमहल सोते जो कुमार । कै चलते गजपै असवार ॥ १७४ ॥ पांय पयादे चलो अव जाय । ऐसे करम उदय भये आय ॥ वहुत वात को कहे वढ़ाय । वहुत कहे कथन वढ़ जाय ॥ १७५ ॥ चलत चलत तव कछु दिन गये । हथिनापुरमें पहुंचत भये ॥ गयो सुसरके वागमंझार । तहां विश्राम करो जो कुमार ॥ १७६ ॥ फिर लौटो ताको मन सोई । मनमें आप विचारै जोई । जा दिन व्याहन आये तात । चलत निशान हते अवदात ॥ १७७ ॥ कहां इहिविधिसों जाऊं सोय । मेरे कुटम्बकी हांसी होय ॥ तातैं नेक जो शयन कराय । फेर देश जाऊं अव धाय ॥ १७८ ॥

दोहा—शयन करूं या वागमें, बुद्धसेन चित धार।
हारो है सो पन्थको, सोवे तहां कुमार ॥ १७९ ॥

चौपाई—मालिन देखो नजर पसार। मालिहिं जाय कही तत्काल ॥ हमरो सेट जमाई जोय। सोवत है यह वागन सोय ॥ १८० ॥ इतनी सुनकर माली जवै। जल्द सेटपर पहुंचो तवै ॥ तवै सेटसों ऐसे कही। कारण कौन भयो अब सही ॥ १८१ ॥ कोटी ध्वजको पुत्र कुमार। विन बुलाये आये ससुरार ॥ कै धन मूसो चोरन आय। कैतो लियो भूप लुटवाय ॥ १८२ ॥ ढिग वैठे जे जौहरी सवै। कहत भये सो सेटसे तवै ॥ लक्ष्मी तो अति चंचल होय। इस पतियारो करो ना कोय ॥ १८३ ॥ छिनमें राजा छिनमें रंक। छिनमें फकीर करे जु कलंक ॥ तुम लड़का घर आयो जोय। अव आदरसों लावो सोय ॥ १८४ ॥ कछु द्रव्य ता दीजे सार। जासों करै वनज व्योपार। इतनी सुनकर सेट सो जवै। पहुंचो सो वागनमें तवै ॥ १८५ ॥ तौलों नहिं जानी सुकुमार। कर झूटको सु जगायो सार। फिर सुखपाल लियो वैठार। सो लाये निज महल मँझार ॥ १८६ ॥ षट्रसके तेहि भोजन दिये। वहुविधिसों तिस आदर किये। घरकी तियसों यह कह दई। याहि कछू तुम वूझो नहीं ॥ १८७ ॥ जासों मान गलित इन होय। ऐसी वात न वूझो कोय ॥ तिया जाति अति चंचल होई। विन वूझे सो रहै न कोई ॥ १८८ ॥ इक नारी तव ऐसे कही। सखी वात

तुम सुनियो सही । विन वुलाय आये सुसरार । वूझो कारण कौन कुमार ॥ १८९ ॥ चतुर नारि तव ऐसे कही । सो तुम इनको वूझो सही । तव तो सेठ क्रोध अति होय । तातै यह कीजे अव सोय ॥ १९० ॥ सुन्दरीको दीजे मिलवाय । वह वूझे सव वात वनाय। वाके मुख वह सही सुनाय । सेठ सुने तो कछु न कहाय ॥ १९१ ॥ एक पहर निशि वीती जवै । तिया कंत दोऊ मिले तवै । तव सुंदरी फिर ऐसे कही । हो भरतार सुनो तुम सही ॥ १९२ ॥ कारण कौन भयो जु कुमार । विन वुलाय आये ससुरार । तव वोले ऐसे जो कुमार । मेरे वैन सुनों तुम नार ॥ १९३ ॥ छह भ्राता जु कमाऊ भये । हमको देश निकार जु द्ये । हम जावें परदेश मॅझार । तोसों आये कहने नार ॥ १९४ ॥ थोरे दिनमें आवें सोय । मनमें चिंता करो न कोय । तव सुंदरि फिर कैसे कही । मो भरतार सुनो तुम सही ॥१९५॥ रङ्गमहल सोये सुकुमार । कै सोये हो सेजमॅझार । मेरे तातपै जावो कंत । लेय द्रव्य करो वनज तुरंत ॥ १९६ ॥ देखत धूप वदन कुमलाय । परदेशनको कैसे जाय। तातैं सुनियो तुम भरतार । रहिये हथिनापुरी मंझार ॥ १९७ ॥

चाल छंद–तव वोलौ कैसे कुमार । मेरी वात सुनो वर नार ॥ जो रहे ससुरार जमाई । तिन कुलकी सवही गमाई ॥ १९८ ॥ परदेशमें जाऊं सोई । हथिनापुर रहूं

न कोई ॥ तब बोली धुरंधर नारी । सुनियो पिय बात हमारी ॥ १९९ ॥ परदेश ख्याल कुछ नाहीं । कहां गमन करो मेरे साँई ॥ तातें बालम सुन लीजे । हथिनापुर माहिं रहीजे ॥ ॥ २०० ॥ तब बोलो ऐसे कुमार । मेरी बात सुनो वर नार॥ परदेश जाऊं सुखकारी । जाय लच्छि कमाऊं जु भारी । ॥ २०१ ॥ यह बात होवेगी नाहीं । तुम रहो हथिनापुरमाहीं॥ फिर बोली ऐसे नारी । सुनियो पिय बात हमारी ॥ २०२ ॥ जाओ परदेशनमाहीं । मोह संग करो मेरे सांई ॥ तब बोलो ऐसे कुमार ॥ मेरी बात सुनो वरनार ॥ २०३ ॥ यह बात होय ना सोय । त्रियसंग करों नहिं कोय ॥ फिर बोली ऐसे नारी । बालम सुन बात हमारी ॥ २०४ ॥ यह बात न होवे मेरे सांई । दूजी कुछ होनी नाहीं ॥ कै मोकों संग जो लीजे। नहिं हथिनापुरमें रहीजे ॥ २०५ ॥ फिर कुमरा ऐसे कही है । मेरी बात सुनो जो सही है । तुम रहियो पीहरके माहीं । करो भोगविलास वनाही ॥ २०६ ॥ हम जावें विदेशनमांही । मन चिंत करो मति कांहीं । फिर बोली ऐसे नारी । सुनियो पिय बात हमारी ॥ २०७ ॥ पतिव्रता नार जो होई । पियके सुखसों सुख सोई ॥ तुम जाय विदेशनिमाहीं । दुख भुगतो मेरे सांई ॥ २०८ ॥ अरु मैं पीहरके माहीं । करूं भोग विलास वनाहीं । तो धिक जीवन अब मेरो । सुन बालम वचन घनेरो ॥ २०९ ॥ तातें बालम सुन लीजें । मोहूको संग जो कीजे । तब बोले ऐसे कुमार । मेरी बात सुनो वरनार ॥ २१० ॥ यह

वात होनकी नाहीं । समझो निश्चय मनमाहीं । फिर नारी जो ऐसे कही है । पिय वात सुनो जो सही है ॥ २११ ॥ किस कारण जावो कंता । मोसे तुम कहो तुरंता ॥ मोसंग करो ना कोई । यहांतैं पग दीनों जोई ॥ २१२ ॥ तो प्राण तजूं तत्काल । निश्चय जानो भरतार ॥ तव कुमरा जानि लई है । यह तो रहनेकी नहीं है ॥ २१३ ॥ जो हठ कर राखों सोई । फिर नार मिले नहिं कोई । तव वोलो ऐसे कुमार । मेरी वात सुनो वरनार ॥ २१४ ॥ तुम संग करो जो हमारो । तो ऐसो हुकम सिर धारो । सव मोंको कहेंगे लोई । ठगनेको आयो कोई ॥ २१५ ॥ गहने पहरे जो नारी । ते डारे पलंगपर सारी ॥ तो संग हमारो कीजे । नाहिं हथिना-पुरमें रहीजै ॥ २१६ ॥ तव वोली धुरंधर नारी । सुनियो पिय वात हमारी ॥ होवै जो हुकुम तिहारो । सोई है जो कवूल हमारो ॥ २१७ ॥ तव गहने तुरत उतारे । सव ही जो पलंगपर डारे ॥ गजमोतिन हार जो भारी । तिनकी लड़ तोड़ जो डारी ॥ २१८ ॥ भुजवंधन वाजू जाने । कंकण जु जड़ाऊ ताने ॥ मोतिन गजरे सुखकारी । अंगुलीतैं मुंदरी उतारी ॥ २१९ ॥ दुलरी तिलरी सुखकारी । गल कंठसिरी जो उतारी ॥ कोतर सौ गहने उतारे । सव ही जु पलंगपर डारे ॥ २२० ॥ तव वोली ऐसे नारी । सुनियो पिय वात हमारी ॥ मोपै जो रह्यो कछु नांई । सो देखो मेरे सांई ॥ २२१ ॥ इतनी सुनकर जो कुमार । चलनेको भयो है

तैयार । सो अधरात्रिके माहीं । खिरकीकी राह चलाहीं ।
॥ २२२ ॥ देखो कर्म करें जो सोई । ताको मेटनवारो न
कोई ॥ वह कोमल अंग जो नारी । सेजनकी सोवनहारी
॥ २२३ ॥ लखि भूप वदन कुमलाई। सो प्यादे पांव चलाई॥
ते धन्य नारी जगमाहीं । पतिवरता जे सुखदाई ॥ २२४ ॥
जाने सबही सुख छांडो । भरतार संग जो मांडो । तिनको
धन जीवन जानो । तेई सार जगतमें मानो ॥ २२५ ॥ अब
पंथ चले वह दोई । दिनरैन गिने ना कोई ॥ सो चार दिव-
सके माहीं । पहुंचे सो रतनपुर जाहीं ॥ २२६ ॥ सो चार
दिना लों जाने । अन्नपान करो ना ताने । कहां है जिनदर्शन
ताको । कहां हैं गजमोती वाको ॥ २२७॥ भर्ताको जतावै न
नारी । पाले दर्शप्रतिज्ञा भारी । जा धन्य जन्म अवतारी ।
धन धीरजवंती नारी ॥ २२८ ॥

दोहा—नगर रत्नपुर बागमें, सो बैठे अब जाय ।
गांठिमें जाके कुछ नहीं, जिनवर नाम सहाय॥२२९॥

चौपाई—केश सुखाये जबही नार । नग जु परो चोटीके
मंझार । तब भरतासे ऐसे कही, मेरे वाल्लम सुनियो सही
॥ २३० ॥ नग जु गहो चोटीके मँझार । भूल चूक आये
भरतार । ताको लीजो मेरे कंत। जाओ नगरमें तुरन्त ॥ २३१ ॥
काहूके गहने धर सार । भोजन सामा लावो अहार । नग
जो लेय नगरमें गयो । काहूके गहने: धर दयो ॥ २३२ ॥
भोजन सामा लायो तबै । सो बागनमें पहुंचो जबै ॥ सुंदरी

करके तव असनान । करी रसोई मिष्ट महान ॥ २३३ ॥ भरताको तव देई जिमाय । कहत भई तासों जो वनाय ॥ तुम तो जावो नगरमें सोय । उद्यम काज करो अव कोय ॥ २३४ ॥ तवही कुमर नगरमें गयो । आगे सुनो जो कारण भयो ॥ अपने भागको भोजन जोय ॥ भूखनको जु खवायो सोय ॥ २३५ ॥

दोहा—अपने हिस्सेको असन, भूखन दियो जिमाय ।
वैठी सुन्दरी वागमें, और सुनो मन लाय ॥ २३६ ॥
कहां जिनदर्शन साधु हो, कहां गजमोती सार ।
कैसे भोजन वह करे, धर्मधुरंधर नार ॥ २३७॥

चौपाई—वहुत वात को कहे वढ़ाय । तीन दिवस वीते अव ताय । चार दिवस भये पंथ मॅझार । सप्त दिवस वीते अति सार ॥ २३८ ॥ कंठ प्राण रह गये जव सोय । तजी प्रतिज्ञा न ताने कोय ॥ प्राण कवूल करे अव सोई । धीरज ना छाड़ो तहां कोई ॥ २३९ ॥ धन्य जन्म ताको अवतार । धन्य प्रतिज्ञा पालनहार । यह तो कथा यहां ही रही । आगे और सुनो जो भई ॥ २४० ॥

पद्धरी छन्द—तहां प्रथम स्वर्गके मध्य जान । सौधर्म इंद्र वैठो महान ॥ लागी जो सभा ताकी अनूप । सव देव जुरे वैठे स्वरूप ॥ २४१ ॥ तव इंद्र अवधि करके जो सार । भूकी सव जानी वात हाल । देवनसों भाषी तव सुरेश । मम वात सुनो निश्चय अशेष ॥ २४२ ॥ इक

त्रिया जु है भूल्लोकमाहिं । अति जैनधुरंधर सो सुभाहिं । जो दर्शनप्रतिज्ञा लई चाह । मुनिराज पासि कीने जु हाल ॥२४३॥ गजमोति चढ़ाये जबै लाय । तब वह भोजन करि है बनाय । ताके पूरव विधि उदै आय । ताको पति परदेश दिये कढ़ाय ॥ २४४ ॥ सो आयो हथिनापुर जु माहिं । ताकी संग ताने तजी नाहिं । सो नगर रतनपुर बाग माहिं । बैठे तिनकी कछु गांठि नाहिं ॥ २४५ ॥ कहां गजमोती ताको जु सार । कहां जिनदर्शनको करै नार । तिस सप्त दिवस बीते जु होय । जल अन्न ग्रहन नहिं करी सोय ॥ २४६ ॥ ताके भरताको खबर नाहिं । यह भोजन करती है कि नाहिं । है कंठ प्राण रह गये सोय । धीरज तौ भी छांडो न कोय ॥ २४७ ॥ प्राणोंको तजिबो कर कबूल । छांडी जो प्रतिज्ञा नाहिं मूल । जो प्राण तजै यह नार सार । तो धर्म हटे इस जग मँझार ॥ २४८ ॥ जिनराजधर्मको नाश होय । अरु फेर प्रतिज्ञा करै न कोय । इक देव लियो तबही बुलाय । तासों हरि हुकम करो बनाय ॥ २४९ ॥ तुम जावो अब भूल्लोकमाहिं । तिहिं जिनदर्शन दीजो कराय । जिनराजभवन रचियो जु सार । तहां रत्नबिंब थाप अपार ॥ २५० ॥ तब इंद्र हुकमतै चल्यो देव । छिन एक विलम्ब करी न भेव । सो आयो रत्नपुर बाग माहिं । विक्रियारूप कीनो बनाय॥२५१॥ भेदी धरणी जहँ बैठि नार । मंदिर रचियो ताने अपार । जहँ रत्नबिंब थापे जु सोय । तहां जगमग जगमग ज्योति

होय ॥ २५२ ॥ अरु गजमोतिनके ढेर सोय । इस भांति तहां जो ठाट होय ॥ सुंदरि बैठी सो बाग माहिं । धसको जो चरण ताकों तहांहि ॥ २५३ ॥ तब कर सो कर तहां देत नार । सो शिला खड़ी लखि यहां सार । तब शिला खोल देखे जो त्रिया । मानो जगमग जरतहै सु दिया॥२५४॥ जिनराज भवन देखो जु सार । मनमें आनंद भयो अपार ॥ कैसे अब मनमें दिसी सोइ । मानो नवनिधि पुन आय लोइ ॥ २५५ ॥ सो धसी भवनमें जबै नार । फिर करती तब कैसे विचार ॥ कहां जल मोको अब मिले सोय । जातैं मेरो अँग शुद्ध होय ॥ २५६ ॥ जब वांई दिशि चितवै जो नारी । कंचनके कलश भरे जो वारि ॥ अति उज्जल गंगानीर जान । असनान करो ताने महान ॥ २५७ ॥ फिर मनमें सुंदरि कहै सोय । अब कहां गजमोती चढ़ाउं जोय ॥ तब दहिनी और चित्त धरो जोइ । गजमोतीन ढेर पड़े जु सोय ॥ २५८ ॥ तब गजमोती करमें जु लेय । जिनराज अग्र सो पुंज देय ॥ बहुविधिसों अस्तुति करी सोय । मन वच तनकर शुद्ध होय ॥ २५९ ॥ तुम धन्य जिनेश्वरदेव सार । तुमरे दर्शन मोहिं मिले सार ॥ अरु याही भव मांगूं जो यही । जिनराज दर्श मिलियो जो सही ॥ २६० ॥ जब चलत भई तहां तै सु नार । आगे पग दीनों तबै सार ॥ युग मोती पाये धरे सोय । नरमादी देवमयी जु होय॥२६१॥ वह सुंदरीने लीने ऊठाय । तब ऊपर भवनके पहुंची आय ।

सो शिला तहांतें कछु हटाय । फिर बागनमें पहुंची सु धाय ॥ २६२ ताठों वालम आये सो जोय । तासों किमि कहन भई जो सोय । मो क्षुधा लगी मेरे कंत आय । लावो सामा भोजन वनाय ॥२६३॥ इतनी तब सुन करके कुमार । भोजन सामा लायो सु हाल । सुन्दरीने रसोई करी सोई । तब वाने भोजन करो जोई ॥ २६४ ॥ अष्टम दिन भोजन करो सोई । जिनदर्शनफल कर लीनों सु जोई । ता धन्य जन्म अवतार सोय । जा सम त्रिय नाहीं और कोय॥२६५॥ देखो दर्शनफल अब सार । कैसे ततखिन मिलो हाल । तातैं नर नार सुनो जु सोय । नित दर्शप्रतिज्ञा करो जोय ॥ २६६ ॥

दोहा—अष्टमदिन जब सुंदरि, भोजन करो वनाय ।
और कथा आगे सुनो, जो कछु जैसी आय ॥२६७॥

चौपाई—यह तो कथा यहांही रही । आगें और सुनो जो भई । अब हथिनापुर नगर मँझार । प्रात भयो जाग्यो परवार ॥ २६८ ॥ देखो तहां तबै अब सोई । वरकन्या जु रहे नहिं कोय । गहनो उतरो धरो जो सार । रुदन करे सवही परिवार ॥ २६९ ॥ सीस धुने ताकी अब माय । भयो कोलाहल महलों जाय ॥ सुनिके सेठ तहां जब गयो । कारण कौन सु पुछत भयो ॥ २७० ॥ तब सेठ सों कैसे कही । अचरज देखो इक अब सही । गहनो उतरो धरो है सोई । पुत्री वर जो गये अब दोई ॥ २७१ ॥ तब सेठ फिर कैसे कही । मैं वरजी मानी सो नहीं ॥ काहू

चोल दियो अब सोई। पुत्री कुंवर रहे ना कोई ॥ २७२ ॥ इहविधि रुदन करै परिवार। रोवै तहां सबै नरनार । यह तो कथा यहां ही रही। अब तो फिर बागनमें गई ॥२७३॥ तब सुदरीने कैसे कही। मो भर्तार सुनो तुम सही ॥ तुमको बीत गये दिन चार। नित प्रति जावो नगर मँझार ॥२७४॥ उद्यम करो नहीं तुम कोय। सो हमसों कहिये अब सोय ॥ तबै कुमर फिर ऐसे कही । हो वरनार सुनो तुम सही ॥ २७५ ॥ अशुभ कर्मको उदय जु होय। तहां सहाय करे ना कोय। सब कोई जाने हमको सार। जौहरी कहेंगे है जो कुमार ॥ २७६ ॥ इतनी बात कहे कोउ नहीं। लेओ द्रव्य हमपैंते सही। तासों करो बनज व्यापार। ऐसो तो कोउ कहै ना सार ॥ २७७ ॥

दोहा—जो शुभ होते उदय मम, हे सुनियो वरनार ।
तो काहेको तात हम, घरतैं देत निकार ॥ २७८ ॥

चौपाई—तातै नार सुनो तुम सोय। हमरे उदय कछु ना हो-य। इतनी सुनकर सुंदरी कही। हो भरतार सुनो तुम सही ॥२७९॥ मैं बरजे हथिनापुरमाहिं। सो तुमने मानी इक नाहीं। किसी भरोसे चाले कंत। हारी बात कहो जु तुरंत ॥२८०॥ तातै मै अब जानी सोय। तुमपैं उद्यम कछु नाहोय। मै जो कहूं अब करियो सोय। चिंता मनमें करो न कोय॥२८१॥नग गहने इक धरो जु सोय। लावो एक दीनार जु सोय। इतनी सुनी नगरमें गयो। एक दीनार जु लावत भयो ॥ २८२ ॥ फिर दीने

नरमोती ताय । कह्यो भेद तासों समझाय । नृपदरबारहिं जावो सोय । जब तुमको रोके वहां कोय ॥ २८३ ॥ ताको दीजे एक दीनार । फिर पहुंचो जहां है भूपाल ॥ मोती भेट करो जो सार । देखो फिर ताको व्यापार॥२८४॥ इतनी सुनकर तबै कुमार । चल्त भयो तहांतें तत-काल ॥ जब दरबारमें पहुंचो जाय । रोको तहां नकीबने आय ॥ २८५ ॥ तिनको एक दियो दीनार । फिर धकेल कीना दर्बार ॥ भूपती आगे पहुंचा जाय । मोती भेट करो सुखदाय ॥ २८६ ॥ राजा देख प्रसन्न जु भयो । बहुविध ताको आदर दयो ॥ धन्य जौंहरी जे जगमांहिं । ऐसो मोती लावे जाहिं ॥ २८७ ॥ तब ही भूपती ऐसे कही । कहां ठहरे जो बताओ सही ॥ तबै बताये बागमंझार । हुकुम करो तबही भूपाल ॥ २८८ ॥ अब तुम टिको नगरमें आय । एक हवेली दई बताय । इतनी सुनिके तबै कुमार । फिर जा पहुंचो बाग मंझार ॥ २८९ ॥ सुंदरि पास सु पहुंचो जाय । सब वृत्तांत कह्यो समझाय ॥ भूपतिने कहा कीना तबै । भण्डारी बुलावायो जबै ॥ २९० ॥ तब ताको वह मोती दयो । ऐसे ताको कहतो भयो ॥ हुशियारी सों राखो सोय । यह तो बड़ो कीमती होय ॥ २९१ ॥ इतनी सुन भंडारी जबै । मोती लीनो करमें तबै ॥ सो ताने डिब्बा धर दयो । आगे जो कारण भयो ॥ २९२ ॥

छन्द चाल— जब आधी रैनके माहीं: डिब्बातें मोती टहाहीं ॥ सुंदरीके पास जो आयो, नरमादी जोड़ा

मिलाओ ॥ २९३ ॥ तव प्रात भयो तत्काळ । बोली ऐसे वर नार ॥ मोती दियो फिर सोई । तासों कहत भई फिर जोई ॥ २९४ ॥ अब जावो नृप दर्बार । मोती धर भेट जुहार ॥ इतनी सुनी कुमार जब ही । ले मोती चाको तवही ॥ २९५ ॥ पहुंचो नृपके दरबार । जाको कोउ न रोकनहार ॥ नृप आगे पहुंचो जवही । मोती भेट धरो सो तव ही ॥ २९६ ॥ भयो भूप प्रसन्न जो सोई । आछी जोड़ी मिलाई जोई ॥ तवही भंडारी बुलायो । तापै वह मोती मंगवायो ॥ २९७ ॥ जब देखो डिब्बाके माहीं । तामें मोती हैगौ नाहीं ॥ थरहर कम्पो अब सोई । अरु वदन मलीन जु होई ॥ २९८ ॥ भूपतिसों ऐसे कही है । महाराज सुनो जु सही है ॥ ऐसो चोर महलमें आयो डिब्बातैं मोती चुरायो ॥ २९९ ॥ तब भूपति ऐसे कही है । यह वात सुनो जो सही है । ऐसो चोर हुतो कोउ नाहीं । महलनमें चोरी कराहीं ॥ ३०० ॥ तैनेही मोती चुरायो । वड़ी कीमतको कर पायो ॥ याको शूलीपै धर दीजे । क्षण एकहु ढील न कीजे ॥ ३०१ ॥ तव बोलो कैसे कुमार । मेरी वात सुनो भूपार । याकी चूक माफ अब कीजै । वाको जोड़ा अब लीजै ॥ ३०२ ॥ इतनी सुन सब दरवार । ता धन्य कहे सो कुमार ॥ याके प्राण वचावे सोई । ऐसो मोती देवै न कोई ॥ ३०३ ॥ फिर आय नारसे भाखै । दूजो मोती दे मत राखै ॥ तव बोळी धुरंधर नारी सुनियो पिय बात हमारी ॥ ३०४ ॥ ऐसो मोती

मापै नाहीं । कहातैं देऊं मेरे साई । इतनी सुनके जो कुमार। भयो वदत मलीन अपार ॥ ३०५ ॥ मेरी वात सुनो अब सोई । बहुत मनमें दुख होई । फिर बोली ऐसे नारी । सुनियो पिय वात हमारी ॥ ३०६ ॥ मन चिंता करो मति कोई। राखूं वात तुमारी सोई । फिर और भरोसे कंता । ऐसी मति कहियो तुरंता ॥ ३०७ ॥ तव सोंपो मोती सोई । दोनों कर आये जोई ॥ फिर जाय कुँवर दरवार । दियो मोती नृपको दुवार ॥ ३०८ ॥ अब भूपतीने फिर जोइ ।भंडारी सोंप्यो सोई । बहु वांधो जुगती कराई । वेष्टन जो समके माहीं ॥ ३०९ ॥ अवहुं राखो हुशियारी । चौकस जो धरो सुखकारी ॥ फिर धर डिव्वाके माहीं । तालो वन्द दियो करवाई ॥ ३१० ॥ फिर अर्धरात्रिके माहीं । डिव्वातैं मोती उडाहीं । सुन्दरीके पास जो आयो । नरमादी जोडा मिलायो॥३११॥

चौपाई–तवही प्रात भयो तत्काल । फिर बोली ऐसे वरनार । दोनों मोती दिये जव ताय । भेद कयो ताको समझाय ॥ ३१२ ॥ अब जावो नृपके दरवार । मेरे वचन सुनो भरतार ॥ पहले नर मोती है जोय । करियो भेट नृपतीको सोय ॥ ३१३ जव नृप भंडारी बुलवाय । वह मोती मांगेगो राय ॥ तापै मोती कहै न कोय । तव भूपती अति क्रोधित होय ॥ ३१४ ॥ तव नृपसे कहियो समझाय । याकी चूक नृपति कछु नाय ॥ नर मादी मोती जे दोय । इनको यही स्वभाव जु होय ॥ ३१५ ॥ मादीपै नर पहुंचे

जाय । कोस हजारतैं जो उठ जाय ।। अब दोनों राखो भूपार । सो रहिहै तुम्हरे भंडार ।। ३१६ ।। इतनी सुन कर तबै कुमार । सो पहुंचो नृपके दरबार ।। पहले नर मोती तहां जाय । भेट करो नृपकी सो बनाय ।। ३१७ ।। भूपती देख प्रसन्न जु भयो । अब याको जोड़ो मिल गयो । भंडारीसे ऐसे कही । लाओ मोती मिलाँव सही ।। ३१८ ।। वह देखै डिब्बाके माहीं । तामैं वह मोती है नाहीं । थर हर कम्पो मनमें सोय । आज गये पुन प्राण जो मोय ।। ३१९ ।। तब भूपतिसों कैसे कही । हो महाराज सुनो तुम सही । अजहुं चोर जो आयो कोय । ताने मोती चुरायो सोय ।। ३२० ।। इतनी सुनके भूपती जबै । क्रोध करी अति ही पुनि तबै ।। याको सूली देवो धराय । धन लक्ष्मी सब लेवो लुटाय।।३२१।। तबही कुमार फिर कैसे कही । हो महाराज सुनो तुम सही ।। याकी चूक कछु अब नाय । याको भेद कहुं समझाय ३२२ नर मादी मोती जे दोय । इनको यही स्वभाव जु होय । मादीपै नर पहुँचे जाय । कोश हजारन लो उड़ जाय।।३२३।। देवमई तुम जानो सही । यामें फेर कछू अब नही ।। अब याको राखो भूपाल । सो रहिहै तुमरे भंडार ।। ३२४ ।। इतनी सुनकर भूपति जबै । बहुत प्रसन्न भयो सो तबै ।। मनमें भूपति तब कही । याको क्या दीजे अब सही ।। ३२५ ।। जो लछमी दीजे अब सोय । ऐसे मोती तहां कहां होय ।। तातै पुत्री दे अधिकार ।। ऐसो मनमें

करत विचार ॥ ३२६ ॥ तब कुमरसे कैसे कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥ पुत्री वरो हमारी सोय । हम तुमसों अति प्रीती जु होय ॥ ३२७ ॥ तुरतहि पंडित लियो बुलाय । टीका कुंवारको दियो चढ़ाय ॥ फेर उठो तहांते जो कुमार । निजमंदिर पहुँचो ततकार ॥ ३२८ ॥ यह तो बात मन्त्री अब भई । भूपतिने पुत्री सो दई ॥ जब सुंदरिसे कहे सुनाय । तब बोली ऐसे बच आय ॥ ३२९ ॥ यह तो बात भली अब भई । राज जमाई भये तुम सही ॥ एक बात तुम सुनियो सोय । मो मनमे मति विरसो होय ॥ ३३० ॥ तब कुँवर फिर ऐसे कही । हो वरनार सुनो तुम सही ॥ कारण तो तेरो अब यही । ऐसी बात कहो मति सही ॥ ३३१ ॥

चाल छन्द—भूपतिमंडप जो छवायो । तब तुरत ही ब्याह रचायो ॥ अरबी सुरती तहा छाजे । करनालनकी धुन गाजे ॥ ३३२ ॥ युवती बहु मंगल गावें । अधिके आनंद बढ़ावें ॥ शोभा दीनो अतिकार । जाको कौन कहै विसतार ॥ ३३३ ॥ कंचन कलश जो दीने । खासा मलमल बहु चीने ॥ दिये चीर दक्षिणके सार । दीने गजमोतिनके हार ॥ ३३४ ॥ कुण्डल जो काढ़े तहां जानो । अरु माल खजाने मानो ॥ गजराज दिये अति भारी बहु घोड़े दिये असवारी ॥ ३३५ ॥ सुखपाल जो पालकी जानो । नालकी विचित्र बखानो ॥ बहु बात को कहै बढ़ाई । दीनो राज चौथाई ॥ ३३६ ॥ और न्यारे महल उठाये । बहुविधि आनंद बढाये ॥ देखो दर्शनको फल

सोई। भयो पुण्य ततक्षण जोई ॥ २३७॥ तातैं नर नार सुनीजे। नित दर्शप्रतिज्ञा कीजे ॥ जिन दर्श समान न कोई। यही सार जगतमें होई ॥ २३८॥

दोहा—देवचरित्र सु वागतें, दूर भयो तत्काल। अव लक्ष्मी घरमें भई, सो जानो नर नार ॥ २३९ ॥ राजलक्ष्मी पायके, काकै मद नाहिं होय। मद आयो जु कुमारकै, सो सुनियो भवि लोय ॥ २४० ॥ राजकुमारीके महलमें, नित प्रति रहै कुमार। सुंदरि पास न आवही, सो अव कह्यो जु सार ॥ २४१ ॥ घने दिवस बीते जवै, एकदिना सो कुमार। सुन्दरि महल जो आइयो, और सुनो विसतार ॥ २४२ ॥

चौपाई—तबही सुन्दरि ऐसे कही। भो भरतार सुनो तुम सही। यह तो मैं अव सु जान लई। राजजमाई भये तुम सही ॥२४३॥ वे खवरें भूले भरतार। घरतें बाबुल दिये निकार ॥ सो आये हथिनापुरमाहिं। मैंने संग करो जु वनाय ॥ २४४ ॥ सो सव खबर विसर तुम गये। राज ठसका तुमको अव भये ॥ ताकी चिंता मुझे न कोय। एक वात मैं बूझूं तोय ॥ २४५ ॥

दोहा—जैसी मेरी खबर अव, तुम भूले भरतार ॥
तैसे धर्म न भूलियो, सो जानो सुखकार ॥२४६॥

चौपाई—जो भूले तो बहु दुख होय। सो मति भूलो अबै तुम सोय ॥ इतनी सुन कर कुमरा जवै। नीचो

सिर कीनो सो तवै ॥ ३४७ ॥ मनमें लज्जित भयो अव सोय । ता पर ज्वाव वनो नहिं कोय । तव सुन्दरीसों ऐसे कही । चूक माफ कीजे अव सही ॥ ३४८ ॥ जो अव हुकुम तिहारो होई । सोई वात करुं मै जोई । तव वोली ऐसे वरनार । मेरे वचन सुनो भरतार ॥ ३४९ ॥ धर्म वड़ो संसारमॅझार । दुःखदरिद्रविनाशनहार ॥ धर्महिते सुख नरपति होई । स्वर्ग मुक्ति पद पावे सोई ॥ ३५० ॥ ताते एक करो भरतार । जिनमन्दिर वनवावो सार । इस भव तो तुमरो यश होय । परभवको सुखदायक सोय ॥ ३५१ ॥ धर्मकाजमें मेरे कंत । ढील न कीजे करहु तुरंत । इतनी सुनके तवै कुमार । सो पहुंचो नृपके दरवार ॥ ३५२ ॥ तव भूपतिसों ऐसे कही । हो महाराज सुनो तुम सही । जो अव हुकुम तिहारो होय । जिनमन्दिर वनवाऊं सोय ॥ ३५३ ॥ तव ही भूपति ऐसे कही । आछी वात विचारी सही । चाहो तहां वनावो सार । कियो हुकुम नरपति तिहिवार ॥ ३५४ ॥ फिर तहं ते तव चलो कुमार । सो आयो निजगेहमॅझार । तुरतहिं पंडित लिये वुलाय । घड़ी मुहूरत दिन शुभवाय ॥ ३५५ ॥ एक कोसके सो चौफेर । नींव धराई देकर घेर । दिये खजाने तव खुलवाय । द्रव्य खरच कीनो सुखदाय ॥ ३५६ ॥ राखि दरोगा तापर सोय । तिनको हुकुम करो तहां जोय । आवें कारीगर जु मजूर । हुकुम करो तिनको दे मूर ॥ ३५७ ॥ ता पाछे तिनको अव सोय । दिनप्रति

दीजे पैसा दोय ॥ आवै जोइ लगावो सही । कोऊ फिरकै जावै नहीं ॥ ३५८ ॥

दोहा—यह तो अब कहनो नहीं, हमको चाह जु नाय ।
आवै सो जु लगाइयो, नीके काम कराय ॥३५९॥

देशनिदेशनिमें तबैं, खबर भई अतिकार । होय हजारों मिहनती, तहां न परै संभार ॥ ३६० ॥ इसविधिसों जिनभवनको, चलो रकानो सार । अब कथन आगे भविक, सुनो सबै नर नार ॥ ३६१ ॥

चौपाई—यह तो कथन यहां ही रह्यो । अब तो वल्लभपुरमें गयो । हेमदत्त पुनि सेठ जु हाल । जिनदर्शन निंदो सुखकार ॥ ३६२ ॥ ताके पाप थकी अब सोय । द्रव्य रह्यो न गयो सब खोय । छह महिनाके भीतर जान । बहुविधि भई द्रव्यकी हान ॥ ३६३ ॥ छप्पन कोटी ताके दीनार । तामें रह्यो न एक भंडार । गहनो वेच खायो सब कोय । गृह वस्त्रादिक बैचे जोय ॥ ३६४ ॥ फेर रसोईभाजन जान । खाये वेच सबै दुख मान । बहुत बात को कहे बढ़ाय । तिनके उदर जो भरते नांय ॥ ४६५ ॥ धारें सिरपर ईंधन भार । ते अब वेचन जांय बजार ॥ तोऊ उदर भरै ना कोय । आगे और सुनो जो होय ॥३६६॥ फिर निकसे परदेशमॅझार । मांगत भीख फिरै दुखकार ॥ करम करै सो निश्चय होय । ताको मेट सके नहिं कोय ॥ ३५७ कै चलते गजके अवसार ॥ कै चलते रथसजे मॅझार ॥ कै चलते सुखपालन सोय । कै चलते

जो तुरंग न जोय ॥ ३६८ ॥ आवत जब नृपके दरबार । आदर करते थे भूपाल ॥ मांगत भीख फिरें अब सोय । तिनकी वात न बूझे कोय ॥ ३६९ ॥ छह आना छह भावज जान । चौंदह जीव फिरें दुख मान ॥ मांगत भीख फिरें ये सोय । तिनमहँ धीर धीरें नहिं कोय ॥ ३७० ॥ तातें सुनो सबे नर नार । लक्ष्मीगर्व करो मति सार ॥ भ्रमत भ्रमत तिन बहु दिन गये । नगर रत्नपुर आवत भये ॥ ३७१ ॥ नगरसाहु इक ऐसे कही । उत्तम कुल तुम दीसो सही । मांगत भीख फिरो अब सोय । तुमपै क्यों न मजूरी होय ॥ ३७२ ॥ राजजमाई एक कुमार । जिनमंदिर बनवावें सार । लगे मजूर हजारों सोय । नित प्रति मिलते पैसा दोय ॥ ३७३ ॥ तब सेठ फिर ऐसे कही । हमको तो कोउ जानें नहीं । इतनो सुयश लेहु सुख दाय । हमें मजूरी देउ लगाय ॥ ३७४ ॥

जोगीरासा—इतनी सुनकर साह नगरको, आगे भयो सुख-कारी । पीछे चौंदह जीव चले सो, सब सुनियो नरनारी । चलत चलत सो पहुंचे तहां ही, जहां बैठे जो कुमार । ऐसो तसु दरबार सु लागो, ज्यों दुजो भूपाल ॥ ३७५ ॥ कुंडल सोहैं काननमाहीं, हस्त कड़े सुखकारी । गजमोतिनके कंठा सोहैं, खासा मलमल भारी ॥ खड़े नकीब जो ताके बोलें, सजे सघन दरवाजे लगे हजारों नौकर चाकर, कार चलन वहां सारे ॥ ३७६ ॥ तब कर जोरके साह नगरको, ऐसे

कहै सुखकारी । कुमरासौं तव ऐसे विनवै, सुनियो अर्ज हमारी । यह चौदह परदेशी जानो, उत्तम कुल है सोई । इनको अव जो मजूर लगावो, वहुविधि पुण्य सो होई ॥३७७॥ इतनी सुनकै कुमरा जवही, उंची दृष्टी पसारी । मात पिता और भावज भ्राता, चीन लिये सुखकारी । मनमें ऐसे कुमर विचारे, धिक लछमी यह होई । ये तो चंचल जगमें जानो, यामें सार न कोई ॥ ३७९ ॥ ता लछमीके कारण मोको, घरतैं दियो कढ़ाई । सो लछमीके नाश होत ही, भीख मांगकै खाई ॥ सो तौ मांगत भीख फिरै अव, तिनकै रह्यो कछु नाहीं । छप्पन कोटि दीनार सो तिनकै, तहां जो रहेन कांहीं ॥ ३७९ ॥ फिर कुमरा तव, कैसे वोलै । चिन्त करो मति कोई । तुमको हम मजदूर लगावै, चार घरीमें सोई । इतनी कह कर कुमरा जव ही, पहुंचो महलनि जाई । सुंदरिसौं तव ऐसे वोलो, नार सुनो मन लाई॥३८०॥ माता पिता अरु भावज भ्राता, आये हैं पुनि सोई । मांगत भीख फिरै जो सव ही, धीर धरै नहीं कोई ॥ इन मोसौं अति गर्व जो कीनो, घरतैं दियो निकसाई । अव तो दाव हमारो लागो, नार सुनो मन लाई ॥ ३८१ ॥ जो पुनि होवै हुकम तिहारो, सोई करूं मन लाई । मेरी मजुरी करने आये, नार सुनो सुखदाई । कहो तो मैं सुंदरि, इनको भुस खैंच खाल भरवाऊं । इन मोसों अति गर्व जो कीनो इनपे भार धराऊं ॥ ३८२ ॥

चाल छन्द-- तब बोली धुरन्धर नारी, सुनियो पिय बात हमारी। ऐसो तातको वचन उचारो, धिक जीवन जन्म तुमारो ॥ ३८३ ॥ जिनसों तुम पैदा भये जू, तिन ऐसे बैन कहे जू। तुम कोट करो जो कोई, नहिं तिनतैं उऋन होई ॥ ३८४ ॥ हम पूर्व जो कर्म कमायो, तत्काल उदय सो आयो ॥ तातैं वालम सुन लीजे, काहूको दोष न दीजे ॥ ३८५ ॥ यह समझो तुम मनमाहीं, यह कठन जोग तुम नाहीं ॥ तातैं मेरी सुन लीजे, अब कुटम मिलाप जो कीजे ॥ ३८६ ॥ कछु इनको द्रव्य सो दीजे, औगुणपे गुण ही कीजे ॥ तब बोलो ऐसे कुमार, मेरी बात सुनो वरनार ॥ ३८७ ॥ इन गर्व करो अति मोसें, मैं सांचि कहूं अब तोसैं ॥ इक बार मजूरी लगाउं, इनपे अति भार धराऊं ॥ ५८८ ॥ फिर तू ही कहेगी जोई, मैं बात करूंगो सोई। तब बोली ऐसे नारी, वालम सुन बात हमारी ॥ ३८९ ॥ अब हूं तुम चेतत नाहीं, डूबे राज ठसकके माहीं। जिन छप्पन कोटि दीनारा, ते मांगत भीख अपारा ॥ ३९० ॥ तातैं ये कथा सुन लीजे, लछमीको गरब नहीं कीजे। रहती नित काहूके नाहीं, यह तो घरकी परछाहीं ॥ ३९१ ॥ तब बोलो ऐसे कुमार, मेरी बात सुनो वरनार। इक बार मजूर लगाऊं, पीछे पहचान कराऊं ॥ ३९२ ॥ फिर नार कहे पुन कैसे, वालम सुन बात जु ऐसे। मैं तोसों कहूं कछु नाहीं, चाहो सो करो मेरे सांई ॥ ३९३ ॥ जो ऐसो करनो

होई, तो एक करो तुम सोई। जे मात पिता हैं दोई इनतैं तुम पैदा होई ॥ ३९४ ॥ इनको वैठे ही दीजैं, यह कहो हमारो कीजैं। इतनी सुनके जो कुमार, मानी तियकी तिहि वार ॥ ३९५ ॥ पहुंचो मन्दिरमें जाई, जाने लीने दरोगा बुलाई। तिनको जु कहे अब सोई, मम बात सुनो तुम जोई ॥ ३९६ ॥ ये द्वादश जीव सु जानो, इनको जो मजूरी लगानो। दिन चढ़त लगे अब सोई, दिन अस्त लों वैंठ न कोई ॥ ३९७ ॥ अति भार धरो सिर इनपै, अति भारी सो पुन तिनपै। चार प्रहर वैठन न पावैं, तब ही जो मजूरी पावैं ॥ ३९८ ॥ और जे वृद्धे हैं दोई, इनपै नहीं मिहनत होई। इनको वैठे ही दीजैं। यह हुकम हमारो कीजैं ॥ ३९९ ॥ यह हुकम करो जो कुमार, तब कीनो कबूल जो हाल। सुंदरीने खबर जो पाई, वाने लीने दरोगा बुलाई ॥ ४०० ॥ इतनी कहकर समझाये, वृत्तान्त सबै जु सुनाये। सो यह कछु जानत नाहीं, डूबो राज ठसकके माहीं ॥ ४०१ ॥ यह उत्तम कुल है सोई, यह काम करो नहिं कोई। इन कर्म उदय जो आये, यह करन मजूरी धाये ॥ ४०२ ॥ लघु भार धरो इन सोई, दुख व्यापै न जामें कोई। यह हुकम हमारो कीजैं, इनपै लघु भार धरीजै ॥ ४०३ ॥ इतनी सुनकर पुन तबही, जो भये हैं कबूल जु सबही ॥ कुमारको हुकम जो पाळै, और सुन्दरीको हूं धारै ॥ ४०४ ॥ यह नारि धन्य जगमाहीं,

तिनसम कोइ दूजी नाईं । फिर जान सकल परवार, लागे सो मजूरी हार ४०५ ॥

दोहा—इहविधि सो परवार सब, लगे मजूरी सोय ।
और कथन आगे सुनो, जो कारण कछु होय ॥ ४०६ ॥

चोपाई—घने दिवस बीते पुन जबै । करत मजूरी तिनको तबै । एक दिवस सुंदरि तब कही । हो महाराज सुनो तुम सही ॥ ४०७ ॥ तुमरी माता है इक जोय । मेरे महलन भेजो सोय । रहूं अकेली मैं भरतार । दूजी सगि चाहिये कुमार ॥ ४०८ ॥ इतनी सुन कर कुमरा जबै । माता महलों भेजी तबै । कछु टहल ता घर में होय । सुंदरि नहीं करवावै कोय ॥ ४०९ ॥ षटरस आदिक भोजन जान । चावल दाल और पकवान । ताको पोषै तबै सुजान । घृत आदिक रस जान महान ॥ ४१० ॥ ताके हाथसे जानो सोय । सब कुटुम्बको भोजन होय । भरतासे राखो जु छिपाय । सब कुटुम्ब पोषै सु बनाय ॥४११॥ धन्य जन्म ताको अवतार । धन्य दयावंती वह नार । इहविधि सो जाने वह सोई । घने दिवस बीते तहां जोइ ॥ ४१२ ॥ एक दिवस सुंदरी तब कही । माता बात सुनो तुम सही । देखो केश हमारे सोइ, छिन इक ढील करो मति कोई ॥ ४१३ ॥ तब वृद्धा फिर ऐसे कही । सुन्दरी बात सुनो तुम सही । कोटीधुजकी बहु तुम सार, हम दारिद्री हैं अतिकार ॥ ४१४ ॥ रंक भये हम सबही फिरैं, तुमरे आय उदर अब भरैं । तुम ढिग आवनको अब सोय, मेरा तो मुख नाहिं होय ॥ ४१५ ॥

सवैया–इतनी बात सुनी जबही तब, नैन गहे ताके जल छाई। लच्छि युगी संसारविषै; अरु तासम दूसरो कछु नांई। सास मतच्छ जो मेरी यहे अरु मैं जो बहू याकी सुखदाई। सम्पत इनकी पलाय गई अब, मो ढिग आय सके यह नाई॥ ४१६ ॥ फेर दिलासा ताको दई अब, चिंत करो मनमें नहीं कोई। तबही ताके पास गई अरु रेशम डोरी खोलत सोई। ग्रंथिको चिह्न लखो सिरमें जब ताको देख वृद्धा पुन रोई। नैनन आंसू टार दिये पुनि, सुन्दरि दृष्टि परी तब जोई ॥ ४१७ ॥ तब सुन्दरि फिर कैसे कही, अब माता बात सुनो तुम सोई। कारण कौन भयो जु अबै, पुन असि असि भांतिन जो तुम रोई। तब ही वृद्धा ऐसे कही अब, सुन्दरि बात कहूं मैं जोई। जो अब अगली बात कहूं पुनि. तो अब साच गिनै नहिं कोई ॥ ४१८ ॥ तब सुन्दरि फिर ऐसे कही अब. चिन्त करो न कछू मन माई। ज्योंकी त्यों तुम बात कहो इत, किस कारनसों रुदन कराई। तब वृद्धा कर जोड़ कहे अब, सुन्दरि बात सुनो मन लाई। ऐसे न रंक हुते पहले हम, जौहरी थे वल्लभपुर माहीं ॥४१९॥ छप्पन कोटि दीनार मेरे घर, देशन देशन कोठी चलाई। सप्त जो पुत्र है मेरे सबै, इक है लहुरो बुधसेन बनाई! ताको तो व्याह भयो. जब ही, तब सो परनों हथिनापुर माहीं। ताकी जो नार सु आई तबै. अति शीलवंती औ महा सुखदाई॥ ४२० ॥ दर्शप्रतिज्ञा लई मुनिके

ढिग सो गजमोती दंत चढाई। पूरव कर्म भयो जो उदय, लहुरो तब पुत्र दियो कढ़वाई। सो पहुंचो हथिनापुरमें ताको संग करो वियंत जो बनाई। तिनकी सो कछु सुधि नाहिं परी कि गये कहां पुत्र वधू सुखदाई॥ ४२१॥ जबतें वधू काढ़ दई तुमनें तबतें लछमी सगरी सो भगाई। ऐसो सुचिन्ह बहूमें हुतो अब तोको देख हृदय उमगाई। इतनी सुन्दरि जब बात सुनी तब मनमें रोष कियो कछु नाहीं। ऊपरे मनसों तब ऐसी कही अब क्या हमको तू वहू है बनाई॥ ४२२॥ हुकम करो सुन्दरि जो जब पुनि महलनतें तब दई है कढ़ाई। पुत्र-तपै पहुँची सो तबै, तिन कंकर पत्थर मार गिराई। हाय कहा अब तैंने कियो, पुनि जाने कहा सु कहा करि आई। कौन वहू थी कहांकी जु पुत्र, कहांकी तैंने पहिचान कराई॥ ४२३॥ मांगत भीख फिर जगमें सब, पेट भरे उमगे नाहिं आई। अन्न सुजल ताको न छियो अरु पर्वत दई तब ही जो कढ़ाई। सुन्दरिने जब बात सुनी तब तुरतहि कंत लिये बुलवाई॥ ऐसे कहो वरनार जबै अब हो भरतार सुनो मन लाई॥ ४२४॥ जेठ भ्रात सबै तुमरे है, तात समान सदा सुखदाई। ते अब सीसपे भार धरे, अरु आंखननें तुम देखो बनाई। धिक जीवन जन्म अहै अबहू, तुमरो तुमको कछु लाज न आई। तातें वहुतसी हो जो गई पुनि सो अब सबको लीजे बुलाई॥ ४२५॥ फिर कुमरोने ऐसे कही अब हो बरनार सुनो मन लाई। खूब मजूरी

कराऊं अबै, पुनि सो तिनको नहिं छाड्डूं कदाई। इन मोसों अति गर्व करो, अपने मनकी अब लेऊं बुझाई। तब खोलूं पहिचान अबै पुनि सो जानो निश्चय मन माहीं ॥ ४२६ ॥ सुन्दरीने तब ऐसे कही अब हो भरतार सुनो मन लाई। सांचि कहूं तुमसों जो अबै पुनि मोपर तो अब देखो न जाई। बैठ रहो तुम महलनिमें अब मैं सबको इत लेहुं बुलाई। सो पहिराऊं कुटुम्ब सबै, औ सौंपूं द्रव्य तिनको जु बनाई ॥ ४२७ ॥ बात तुम्हरी चलेगी सबै कहा मेरी कछु चलनेकी नाईं। खूब बुराई करूं तुमरी अरु भूपतिसों जाहर करवाइं। कन्त मेरेको कुटुम्ब सबै, और तिनपैं इन्होंने मजूरी कराई। इसविधि सुन्दरी रोस करो अरु कुँवराको सवही जो सुनाई ॥ ४२८ ॥ तब कुमरा मन ऐसी कही पुनि अब तो रोस भई यह नारी। मैं जो कही याको न करूं पुन यह तो उपाय करै अती भारी। फेर दिलासा ताको दई पुनि नार सुनो निश्चय सुखदाई। दिन अस्त भये निशिको सु तबै, सबरो जो कुटुम्ब पै लेहुं बुलाई ॥ ४२९ ॥ दिन अस्त भयो अरु रात भई तब किंकर दियो तिनपै जो पठाई। परदेशिनको ले आयो इतै अब, छिनइक ढील करौ न बनाई। तब किंकर तिनपै जु गयो सो सुनिकै कंपे सबै मनमाहीं। कहा जाने कहा होंवे अबै ताने हम सबहीको जो बुलाई ॥ ४३०॥ कंपत कंपत चाले सबै पुनि सो दरबार पहूंचे आई। जब भीतर पग तिन जु दियो तब फाटक बन्द दिये करबाई।

अधिकैं कंपै तबही जो सर्व और कहा जानैं कहा होत बनाई।
पहुंचे माणिक चौकविर्षे, जहां बैठे पुत्रवधू सुखदाई ॥४३१॥

चाल छन्द—तब बोला ऐसे कुमारा। मेरी बात सुनो सुख-कारा। वह ही हम पुत्र तिहारे। जो देशतैं दिये हैं निकारे ॥ ४३२ ॥ इतनी कहके सिर नायो। हिमदत्तनें कण्ठ लगा-यो। दोनों रुदन करैं अब ऐसे। मानो घन जल वर्षे जैसे ॥ ४३३ ॥ फिर मिलो भ्रातनसों सोई। अधिक जो सनेह जु होई। माताको मिलो तब जाई। भावजसे मिलौ तब आई ॥ ४३४ ॥ फिर सुन्दरीह उठ धाई। जाय सास चरण सिर नाई। और मिली है जिठानानि सोई। बहुविधि को सनेह जो होइ ॥ ४३५ ॥ ताने दिये कोठा खुलवाई। सब कुटुंब वस्त्र पहराई। कुण्डल कानन पहिराये। सिर सीस फूल जो चढाये ॥ ४३६ ॥ गलमें गजमोती माला। खासा मलमल जु दुशाला। इहविधि सो भ्राता पहराये॥ मो तो सबके मन भाये ॥ ४३७ ॥ भावज पहराई साले। तहां चीर दखणके हाले। गजमोती माल सु जानो। मोतिनके गजरे वखानो ॥ ४३८ ॥ भुजबंधन बाजू सोई। कंकन जो जराऊ होई ॥ दुलरी तिलरी सुखकारी। पुनि कंठसिरी तहां भारी॥४३९॥ नग जड़त जु मुन्दरी सारैं। अरु पग नेवर झनकारैं॥ इह विधसों कुटुंब सजवायो ॥ मनमें आनन्द बढ़ायो ॥ ४४० ॥ फिर बोलो ऐसे कुमार ॥ मो भ्रात सुनो सुखकार॥ कछु हमसों द्रव्य सु लीजे ॥ कहुं अन्त गमन अब कीजे ॥४४१॥

फिर सजकर आवो तहांतें । जाने भूप आदि जन जांतें । ले द्रव्य चले असवार । मनमैं आनन्द अपार ॥ ४४२ ॥ कहुँ अन्त नगरके मांही । तब पहुँचे सबही जाई । फिर सजे तहां अब सोई । मनमें बहु हरषित होई ॥ ४४३ ॥ कुमरा कहा कीनो सार । भेजे सो बुलावन हार । हय हाथी दिये पठवाई । सुखपाल सुपालकी भाई ॥ ४४४ ॥ सज साज चले सब सोई । तिनको कहा वर्णन होई । कोई भ्रात गजन असवारी । कोई रथ बैठे है भारी ॥ ४४५ ॥ कोई सो तुरंग उचावैं । बहुविधिके तमाशे लावैं । कोई सुखपालन आये । कोई नाल- कीपे चढ़ि धाये ॥ ४४६ ॥ कोई भावज रथके माहीं । कोई डोलनके मांहीं । कोई तो चढ़ी हैं चंडोले । तहां चाली करत किलोलें ॥ ४४७ ॥ सु निशान रहे फहराई । इहविधि चाले सुखदाई । सो कछुक दिनके माहीं । पहुंचे सो रतनपुर जाहीं . ॥ ४४८ ॥ अरबी सुतरी तहां छाजे । नौवतखानो तहां बाजे बहुते जो ठाठ अपारा । तहां भीर परी बेशुमारा ॥ ४४९ ॥ भूपतिने खबर जो पाई । आये सज्जन समधी भाई । इतनी सुनकर जब राई । डौंड़ी सो नगरमें दिवाई ॥४५०॥ परजा सब ही जु बुलाई । आगे जाकर लीजे भाई । इतनी सुन सब नर नारी । साजे सु तुरंग सवारी ॥ ४५१ ॥

पद्धरी—हय गय रथ वाहन सजे सार । बाजे सु बजें तहां धुनि अपार। चतुरंग जो बल ले जुरें सोय। महाराज सजो तब ही सु जोय ॥ ४५२ ॥ बाजै नौवत अरु धुर निशान। इस भांति नृपति चाले महान ॥ पहुंचो

बागनमें तबै राय । तब सजन मिलाप भये बनाय ॥ ४५३ ॥
फिर लाय नगरमें तहां सोय । निजमन्दिर ले गयो भूप
जोय । पट्रसके भोजन दिये सोय । बहुविधिके तहां सनमान
होय ॥ ४५४ ॥ फिर सकल कुटुंबपरिवार सार । पहिराये
तब भूपतिने हार । फिर पुत्रवहूके पास जाय । परिवार तहां
सब मिलो आय ॥ ४५५ ॥ देखो दर्शनफल तुरत सार ।
तांते सब सुनियो पुरुष नार । नित दर्शप्रतिज्ञा करो सोय ।
ताको फल कहत न अंत होय ॥ ४५६ ॥

दोहा–इहविधिसों परिवार सब, मिलो तहां जो आय ।
धन्य धर्म जिनराजको, वह अब भयो सहाय ॥४५७॥

सोरठा–सबै सुनो नर नार, दर्शप्रतिज्ञा कीजिये ।
भव भव सुखदातार, नरभवको फल लीजिये॥४५८॥

चौपाई–अब निजभवन बनो सुखकार । ताको कौन कहै
विस्तार । झँझरी झरोखे रचे अपार । कहांलों बरणूं ताको सार
॥ ४५९ ॥ कहूं संगमरमरके जान । कहिं कहिं छज्जे लगे
महान । कहुं बिल्लौरी पाथर सार । थंभ बनें ताके सुखकार
॥ ४६० ॥ कहुं तो काश्मीरकी जान । वेदी सुंदरताकी खान ।
कहूं तो लंबे तखता सोय । लगे मोति तहां झिलमिल होय ४६१॥
कहुं सुवर्णकी कीलें जान । कहुं कंगूरे सुन्दर मान । बहुत बात
को कहै बखान । शिखरबंध जिनभवन सुजान ॥ ४६२ ॥
कंचन कलश दिये धरवाय । तिनपर धर्मध्वजा फहराय । तब
बोली ऐसे वरनार । मेरे वचन सुनो भरतार ॥ ४६३ ॥

जिनवरभवन वन्यो अव सोय । करो प्रतिष्ठा ढील न होय । यात्री जुरैं तहां अतिकार । जुरैं सकल नर नार अपार ॥४६४॥ धर्मकाजमें मेरे कंत। ढील न कीजे करो तुरंत। इतनी सुनकै तवै कुमार । पहुंचो तव नृपके दरवार ॥४६५॥ भूपतिसों तव ऐसे कही । हो महाराज सुनो तुम सही । जो अव हुकम तिहारो होय । करूं प्रतिष्ठा मन्दिर सोय ॥ ४६६ ॥ तवही भूपति ऐसे कही । भली वात यह सोची सही । हम लायक जो कारज होय। ताको हम है हाजर सोय ॥ ४६७ ॥ भूपति डौंड़ी नगर दिवाय । सर्व प्रजासों कही सुनाय । आवै यात्री जो अव कोय । काहूपै कछु मांगें जोय ॥ ४६८ ॥ सो ताको दीजै तत्काल । दाम लिखो कागदमें हाल । सव कोठीतैं देहुं दिवाय । जो कोई फिरै तो देहुं कढ़ाय ॥ ४६९ ॥ यात्री गुना करैं जो कोय । ताकी चूक माफ सव होय । सैन दई भूपति परवान । दइ हुशियारी तव कर मान ॥ ४७० ॥ धन भूपाति जे जगमें होई । तिन विन धरम चलै न कोई । फेर उठो तहांतैं जु कुमार । सो पहुंचो निजगेहमँझार ॥४७१॥ तुरतहिं पंडित लियो वुलाय । घरी मुहूरत दिन सुधवाय । पंच सकल वुलवाये जवै । पाती कुमरनें फेरी तवै ॥ ४७२ ॥

दोहा—ग्राम नगर कहांलग कहूं, वर्णत लगै अवार ।
थोरे से अव देशको, सुनो सवै नरनार ॥ ४७३ ॥

छन्द चाल—अव मालव देशके माहीं । पाती दीनी पठवाई ।

कुरुजांगल देश सु जानें। तहांको अब लेख बखानो ॥४७४॥ पुनि देश अम्बावतमाहीं। तहांको पाती पठवाहीं। महाराष्ट देश अब जानो। पुनि कौशल देश बखानो ॥ ४७५ ॥ पुनि कोकन देश जु सार। भेजे सुलेख सुखकार। अरु मागधदेश है सोई। भेजे अंगदेश जोई ॥ ४७६ ॥ काशी काश्मीर सु जानो। पटनाको लेख बखानो। सोरट मेरठ अब सोई। पुन धुरि गुजरात ज होई ॥ ४७७ ॥ औ देश तैलंगके माहीं। तहांको पाती पठवाहीं। बङ्गभपुरको भिजवाई ॥ हथिनापुरको पठवाई ॥ ४७८ ॥ इत्यादिक देश जो भारी। भेजे सुलेख सुखकारी। यात्री सो जुरे अधिकारी। तहां जुरे हैं सकल नर नारी ॥ ४७९ ॥ दल बादल तम्बु लगाये। सुनिशान धुजा फहराये। अरबी सुतरी तहां छाजें। करनालनिकी धुनी गाजें ॥ ४८० ॥ देश देशके श्रावक आये। तहां भये आनंद बधाये। तहां दिये हैं खजाने खुलाई। लछमी तहां खरच कराई ॥ ४८१ ॥ यात्री सो जुरे तहां सोई। तहां भीर शुमार न कोई। बहुविधि सनमान जु कीने। सबको आदरसों लीने ॥ ४८२ ॥

दोहा—इहविधि सो मेला अबै, जुरो तहां सुखकार।
अब रचना जिनभवनकी, सुनो सबै नर नार ॥४८३॥

चौपाई—अब जिनभवन रचो सुखकार। सो सुनियो सबही नरनार। मखमलके चंदोये बनाये। कीनख्वाबको दिये तनाये ॥ ४८४ ॥ कहुं अब लाल बनातें जान। बास

बादले चादर मान । अब कहुं कीनखावके सार । लगे चंदोये तहां सुखकार ॥ ४८५ ॥ बावन गज चौंतरा बनाय । तापर अंगुल बावन भाय । शोभा सब बरनो सुखकार । बनो अधिक दुतिचन्द्र प्रकार ॥ ४८६ ॥ मोतिनके मांड़ने सुखकार । जगमोतिनके चौक जु सार । कंचनकी बेदी रचि सार । तापर हेमसिंहासन सार ॥ ४८७ ॥ मोतिनकी झालर लटकाय । हीरा नगन जड़े सुखदाय । रत्नबिंब थापे सुखकार । पार्श्वनाथ जिनप्रतिमा धार ॥ ४८८ ॥ रूप चतुरमुख यहां अब जान । चहूं बगलतैं दर्शन मान । चार ओर पूजा मनहार । चार ओर चढै द्रव्य अपार ॥ ४८९ ॥ कैसे सजे पुजेरी सार । सो सुनियो सबही नर नार । नगन जरी मुँदरी अति खरी । अंगुरिनमें शोभै तहां भरी ॥ ४९० ॥ गलमें गजमोतिनकी माल । कंध जनेऊ शोभ विशाल । कानन कुंडल झलकै सोय । हस्त कड़े कंचनके दोय ॥ ४९१ ॥ कटिपर करधोनी तहां सार । पग नेवर जानो सुखकार । माथे मुकुट जो तिनके सोहै । तिनके तिलक देख मनमोहै ॥ ४९२ ॥ इहविध सजे पूजेरी सार । मानो देवरूप अतिकार । इन्द्रध्वजको पाठ करेय । बहुविधको तहां ठाठ धरेय ॥ ४९३ ॥ अष्टद्रव्य सो चढ़े अपार । सो जानो नाना परकार । धूप घटा खेवें सुखकार । मानो पाप जलै ह्वै छार ॥ ४९४ ॥ छत्र चमर जानो सुखकार । श्री जिनप्रतिमा है मनहार । कंचन छड़ी लिये सुखकार । आसादार

खड़े मनहार ॥ ४९५ ॥ अरवी मुनगी तहां वजन्न । करना-ल्नकी धुनि गाजन्न । तूर मृदंग वजे मुखकार । मुहचंग मुरली संभार ॥ ४९६ ॥ जय जय तहां पंडित गाज । घंटा और झाल्री वाजे । दिनको पूजन हो सुखकार । रात जागरण हो धुनिसार ॥ ४९७ ॥ बहुत बात को कहे बढ़ाय । बहुत कहे तो कथा वढ़ जाय । सो तो सप्त दिवसके अन्त । पूरण पाठ भयो जो तुरन्त ॥ ४९८ ॥ निनमनि पहुंगर भोजन दिये । बहुविधिसों सन्मान जो किये । अष्टम दिन लागो जब सही । रथयात्राकी तियारी भई ॥ ४९९ ॥ गज साजे सो रथ चलवाय । बहुविधिको अति धन खरचाय । सूत फेरबेकी विधि होय ॥ तहां विनके उठो तब सोय ॥ ५०० ॥ राजकुमारी तब मद धार । अपने मनमें गर्व विचार । मोसों बालमसों सुखकार । निश्चय गांठि जुरे अतिभार ॥ ५०१ ॥ औरसे गांठ जुरे नहिं कोय । कौनकी अब मकदूर जो होय । इतनी पंच सकल सुन सार । मन उदास कीनों तत्काल ॥ ५०२ ॥ जुरके सकल पंच अवधार । भूप कचहरी गये सब सार । तब ऐसे बोलो सो राय । हमरी बात सुनो मन लाय ॥ ५०३ ॥ काहे कौनने आन सतायें । तातें मो दरबार जु आवे । सकल पंच तबहीं कर जोर । भूपतिसों कहे वचन निहोर ॥ ५०४ ॥ पूरो पाठ भयो सुखकार । सूत फेरबेको सुविचार । किससों गांठ जुरे अब सोय । जासों

हुकुम तिहारो होय ॥ ५०५ ॥ तब बोलो ऐसे नृप राय । न्यायवन्त जानो सुखदाय । कारण सब सुन्दरिको जोय । वाकी गांठ जुरे अब सोय ॥ ५०६ ॥ इतनी सुन सब पंच जु सार । चलत भये तहांते सुखकार । जिनमन्दिरमें पहुंचे जाय । आगे और सुनो मन लाय ॥ ५०७ ॥ सुन्दरि और कुमारसो तबै । गांठि जुरी तत्काल हि जबै । पूर्ण भूत महा सुखकार । जय जय शब्द भये तहां भार ॥ ५०८ ॥ बहु-विधिके बाजे बाजन्त । मनमें बहु आनन्द धरन्त । बहु बात को कहे बढ़ाय । इहविधि भई प्रतिष्ठा भाई ॥ ५०९ ॥ नवमो दिन लाग्यो पुनि जबै । यात्री विदा किये सब तबै । बहु विधिको सन्मान कराय । निज घर सब पहुंचे सुख दाय॥५१०॥ हथनापुर वल्लभपुर होय । राखे द्वै दिन फिरके जोय । तेहू विदा कीने अब जाय । निज निज पुर पहुंचे सुखदाय५११

दोहा—इहविधि सो जिनभवनकी, करी प्रतिष्ठा सार ।

धन्य जन्म तिनको अबै, धन तिनको अवतार॥५१२॥

चौपाई—यह तो कथा यहां ही रही । आगे और सुनो जो भई । वल्लभपुरके यात्री सोय । अपनी नगरी पहुंचे जोय ॥ ५१३ ॥ तिनने जाय नृपतिसों कही । हमरी बात सुनो तुम सही । तुमरे भयसों भूपाल । काढो सेठने यह जु कुमार ॥ ५१४ ॥ ताने नगर रत्नपुर जाय । करी प्रतिष्ठा बहु सुखदाय । यात्री जोरे ताने जोय । सब वृत्तान्त सुनायो सोय ॥ ५१५ ॥ इतनी सुनकर भूपति जबै । मनमें बहु

पछतायो तबै । ऐसो साधरमी नर सोय । पर भयसों निकसे जोय ॥ ५१६ ॥ मैं तो तब जानी सो नहीं । ताकी दृढ़प्रतिज्ञा सही । मोसो पापी और न कोय । ऐसो मनमें दुखी सोय ॥ ५१७ ॥ तुरतहिं मंत्री लिये बुलाय । कहन लगो तिनसों अब राय । कुमराको लावो अब सोय । छिन इक ढील करो मति कोय ॥ ५१८ ॥ तब मंत्री बोले कर जोर । हो महाराज सुनो जु बहोर । राज्य करै जो रत्नपुर माहिं । सो यहां तो आवेगो नाहिं ॥ ५१९ ॥ तब ही भूपति ऐसे कही । वासों ऐसे कहियो सही । जो तू अब नहिं चले कुमार । निश्चय प्राण तजे भूपाल ॥ ५२० ॥ इतनी सुनकर मंत्री जबै । चालत भये तहांतै तबै । चलत चलत जब कछु दिन गये । नगर रत्नपुर पहुंचत भये ॥ ५२१ ॥ कुमर पास पहुंचे ते जाय । तिनसों मिलाप करो सुखदाय । बहुविधि सों उन आदर किये । षटरसके तहां भोजन दिये ॥५२२॥ तब मंत्री बोलै कर जोर । कुमरा वचन सुनो जु बहोर । चूक माफ कीजे अब सोय । भूप बुलावे चलावो होय ॥ ५२३ ॥ तब हि कुमर फिर ऐसे कही । हमरी बात सुनो तुम सही । वल्लभपुर नगरीमें सोय । तामें पग नहिं धरै जो कोय ५२४ तब मंत्री बोले कर जोर । कुमरा वचन सुनो जो बहोर । जो अब तुम नहीं चलो कुमार । निश्चय प्राण तजै भूपाल ॥ ५२४ ॥ तब सुन्दरि फिर ऐसे कही । हो भरतार सुनो तुम सही । भूपति प्राण तजै अब सोय । यह तो बात ठीक

नहिं होय॥ ५२६ ॥ तातैं तुम चालो भरतार। निश्चय अपने देशमँझार। और एक समझो मनमाहिं। तुमसों मैं जु कहि सकूं नाहिं॥ ५२७॥ सबहि कुटुम्ब जुरो तुम सार। सो तो याही नगरमँझार। अब तो तात मातको सोय। नाम चले जु यहां नहिं कोय॥ ५२८॥ राजजमाइ कहे सब लोय। कुटुंबको नाम लेय नहिं कोय। तातें समझो अब भरतार। चलिये अपने देशमँझार॥ ५२९॥ इतनी सुनकर कुमरा तब॥ करी तयारी चलनेकी जब। फिर पहुंचो नृपके दरबार। कहत भयो ऐसे जु कुमार॥ ५३०॥ हो महाराज वात सुन लेहु। हमरी अरज चित्तमें देहु। जो अब हुकम तिहारो होय। तो मैं जाउं देशको सोय॥ ५३१॥ इतनी सुनकर भूपति कही। अब जो कही फिर कहनो नहीं। तब बोलो ऐसे जो कुमार। मेरी वात सुनो भूपाल॥ ५३२॥ आयो लेने मंत्री सोय। मोसों भेद कह्यो पुनि जोय। मो बिनप्राण तजे अब राय। तातैं जानो जोग दिखाय॥ ५३३॥ एक बार तो जाउं सोय। फिर आउं तहां रहूं न कोय। तब भूपति मन ऐसे कही॥ अब तो यह रहिवेको नहीं॥ ५३४॥ जो हटकर अब राखूं कोय निश्चय प्रीतिभंग अब होय। हुकम करो भूपतिने जब। जाव देश तुम अपने अब॥ ५३६॥ सकल कुटुंब सजायो सार। चतुरंग सेना दई सुखकार। फिर आयो निजगेहमँझार। आगे और सुनो विस्तार॥ ॥ ५३६॥ घरी मुहूरत दिन सुधवाय। कुंवर चले तहँतैं सुखदाय। किसविधिसों चालो अबजोय। सो नरनार सुनो अब सोय॥

चाल छंद—कोई आता गजन असवारी । कोई रथ बैठे हैं भारी । कोई जो तुरंग नचावैं । बहुभांति तमाशे लावैं ॥५३८॥ कोई पालकीपै सुखकारी । कोई नालकीपै असवारी । कोई भावज डोलनमाहीं । कोई पालकीमें चढ़ी जाहीं ॥ ५३९ ॥ कोई सो चढ़ी चंडोले । बहु चालत करत किलोलें । हय गज रथ वाहन भारी । चतुरंग दल सज असवारी ॥ ५४० ॥ अरबी सुरती तहा छाजें । नौबतखाने तहां बाजें । सुनिशान रहे फहराई । बाजें बाजनकी धुनि भाई ॥ ५४१ ॥ देखो दर्शनको फल सोई । पायो है तनच्छिन जोई । उत मांगत भीख जो भारी । इस चालै निशान सुधारी ॥ ५४२ ॥ तातैं नर नार सुनीजें । नित दर्शप्रतिज्ञा कीजें । तहांतैं चाले वे सोई । दिनरात्रि गिने ना कोई ॥ ५४३ ॥ सो कछुक दिननके माहीं । हथनापुर पहुंचे जाहीं ॥ ससुरेने खबर जो पाई सन्मान करो अधिकाई ॥ ५४४ ॥ फिर सकल कुटुंब परवार । पहराये भूषण सार । अरु षटरस भोजन दीने । बहुविधि सो आदर कीने ॥ ५४५ ॥ बहु बात कहें को बढ़ाई । दिन दो राखे भरमाई । फिर कूच करो अति मोई । दिन रात्रि गिने नहिं कोई ॥ ५४६ ॥ सो कछुक दिननके माहीं । वहृभपुर पहुंचे जाहीं । गावनमें पहुंचे सोई । आगे और सुनो जो होई ॥ ५४७ ॥

चौपाई—खबर सुनी जब ही भूपाल । ढोंडी दिवाई नगर मंझार । परजा लई सबै बुलवाय । आवे है लेनेको राय

॥ ५४८ ॥ हयगज रथ वाहन सजवाय। चल्त भयो तहांतैं सो राय। अरवी सुतरी औ करनार। बाजें तूर मृदंग सदकार ॥५४९॥ बागनमें पहुंचो सुखदाय। भयो मिलाप गव अति भाय। फिर ल्याय निज महलमंझार। बड़े करे सन्मान अपार ॥ ५५० ॥ सकल कुटुम्ब दिये पहराय। पट्रस भोजन दिये बनाय। देखो दर्शनको फल सार। जहां जाय तहां लक्ष्मि अपार ॥ ५५१ ॥ फिर आये सो गृहमंझार। दरवाजे पहुँचे तत्कार॥ पहले तो परिवारे सब। भीतर महलन पहुँचे तब ॥ ५५२ ॥ सुंदरि तो पीछे रह गई। भीतरको जब चलती भई। देखो दर्शनको फल सोय। कैसे मिलो ततछिन होय ॥ ५५३ ॥ जहां पग धारे सुंदरि नार। तहांसे कढ़े खजाने सार। जहां जहां सुंदरि चितवे ॥ तहां तहां लक्ष्मी धरमें होय ॥ ५५४ ॥ जहां जहां बैठे सुंदरी नार। छप्पन्न कोटी होय दीनार। यह तो पुण्यतनो फल सार। दर्शप्रतिज्ञा करो संभार ॥ ५५५ ॥ जबसे सुंदरी घरमें आई। तबसे लक्ष्मी दई दिखाई। फिरके छप्पन ध्वजा गड़ाय। देशन देशन बनज चलाय ॥ ५५६ ॥ श्रीजिनभवन सुपूज रचाय। वसुविधि द्रव्य तहां सो चढ़ाय। नारी बहुविधि मंगल गाय। अधिक तहां आनंद बढ़ाय ॥ ५५७ ॥ याचक जनको दान सु दीन। सज्जनको सन्मान जु कीन। इसविधिसों सुंदरि घर आय। दर्शप्रतिज्ञातनो परभाय ॥ ५५८ ॥ दर्शमहिमा कथन

न होय । दर्शसमान और नहिं कोय । दर्शन करै परमपद होय । दर्शन चक्रवर्ति गुण सोय ॥ ५५९॥ दर्शनतें इन्द्रासन पाय । दर्शनफल फणीश गुण गाय । बहुत बात यों कहै बढ़ाय । दर्शतेंत त्रिभुवनके राय ॥ ५६०॥ तातें सुनो सबै नर नार । दर्शनप्रतिज्ञा लीजेसार । दर्शसमान और ना कोय । दर्शन अमर अजर पद होय ॥ ५६१ ॥ जो नित दर्श करैं नर नार । धन्य जन्म ताको अवतार । जे नर दर्शन करैं ना कोय । पशुसमान नारी नर होय ॥५६२॥ तातें सुनियो सब नर नार । कीजे दर्शप्रतिज्ञा सार । अब यहां प्रश्न करैं जो कोय । जाके दर्शप्रतिज्ञा होय ॥ ५६३ ॥ जो कछु कर्म-उदय अतिकार । श्रीजिनदर्श मिलै ना सार । तो अब कहा करै वह सोय । श्रीगुरु उत्तर दीजे मोय ॥५६४ ॥ तब बोले मुनि दीनदयाल । याको भेद सुनो तत्काल । जैसो जोर चलै अब मोय । दर्शविना सो रहै न कोय ॥ ५६५ ॥ जो कछु कर्मउदय तहां होय । श्रीजिनदर्शन मिलेना कोय । तो मनमें यह व्रत ले लीजे । सो नर नार सबै गुन लीजे ॥५६६॥ आज अलाभ भयो जो मोय । श्रीजिनदर्शन मिले ना कोय। धिक जीवन मेरो अवतार । जो जिनदर्शन मिलो ना सार ॥ ५६७ ॥ शक्तिसमान दण्ड पुनि लेय । औषधको उपवास करेय । जो उपवासकी शक्ति न होय । रस परित्याग करै वह सोय ॥ ५६८ ॥ जो इतनी पुनि शक्ति न होय । पांच चार रस छांडे सोय । जो इतनी पुनि शक्ति न होय। इति-

धि त्याग करै वह सोय ॥ ५६९॥अन्न ही चढ़ै रसोई जाय । तब ही देखे नजर लगाय । दूध दही घृत तेल सुजान। मिष्ट लवण पट रस यह मान ॥ ५७० ॥ जासों प्रीति अधिक जो होय । वह रस त्याग करै न सोय । इहविधि करै आखड़ी जोय । जाके दर्शनप्रतिज्ञा होय ॥ ५७१ ॥ तातैं नर नारी सुन लेहु । दर्शनप्रतिज्ञा पालहु येहु । दर्शसमान और ना कोय । दर्शसमान जगत ना होय ॥ ५७२ ॥ तातैं दर्शप्रतिज्ञा लेय । दर्शनविन भोजन न करेय । दर्शनविन धिक जीवन होय । यह निश्चय कर जानो सोय ॥ ५७३ ॥ दर्शकथा यह पूरण भई । भारामल्ल प्रगट कर कही ॥ भूल चूक जो अक्षर होय । पण्डित शुद्ध करो सब कोय ॥ ५७४ ॥ मैं मतिहीन कही अतिकार । क्षमियो बुधजन सब निरधार । पढ़ैं सुनैं जन जो मन लाय ।जन्म जन्मके पातक जाय ॥५७५॥ दुख दरिद्र सब पाप नशाय । जो यह कथा सुने मन लाय । पुत्र कलत्र बढ़ै परिवार । जो कथा सुनैं नर नार ॥ ५७६ ॥

इति दर्शनकथा सम्पूर्ण ।